लैम्प शेड

(यशपाल जी की अप्रकाशित कहानिया)

यशपाल

•

विप्लव कार्यालय लखनऊ की ओर से

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गाधी माग, इलाहाबाद-१

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गाधी माग
इलाहाबाद-१ द्वारा प्रकाशित

●

प्रथम सस्करण
१६७६

●

लोकभारती प्रेस
१८, महात्मा गाधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा मुद्रित

मूल्य ६ ००

प्रकाशकीय

हिन्दी कहानी-साहित्य के विकास में प्रेमचंद के बाद यशपाल का नाम सर्वाधिक लोकप्रिय है। समकालीन वास्तविकताओं के प्रत्ययों को यशपाल ने अपनी परिवर्तनकारी दृष्टि के कारण इतनी सहजता और तीखेपन के साथ प्रस्तुत किया है कि उनकी कहानियों को भूल पाना मुश्किल हो जाता है। यही कारण है कि कहानीकार के रूप में वे हिन्दी के सबसे अधिक पढ़े जाने वाले और प्रिय कथाकार हैं।

यशपाल की रचनाओं का प्रकाशन अत्यन्त व्यवस्थित है और समय-समय पर उनकी रचनाएँ पाठकों तक पहुँचती रही है, फिर भी उनके इतने विस्तृत सृजनात्मक जीवन में कुछ एक रचनाएँ अप्रकाशित रह गयी हैं। लैम्प शेड में ऐसी ही छः कहानियाँ पहली बार प्रकाशित की जा रही हैं। आशा है इन कहानियों के प्रकाशन से हिन्दी कहानी साहित्य की श्रीवृद्धि होगी।

हमारा यह आगे भी प्रयत्न रहेगा कि यशपाल की अप्रकाशित रचनाओं की खोज जारी रहे। यशपाल साहित्य के प्रकाशक के रूप में यह हमारा दायित्व है जिसे पूरा कर हमें विशेष प्रसन्नता होगी।

—प्रकाशक

अनुक्रम

•

नैतिक बल

रेल के दूसरे-तीसरे दर्जे मे, यात्रियो से, इसानियत के नाम पर बैठने भर की जगह के लिए अनुरोध किया जा सकता है। फर्स्ट क्लास मे ऐसी बात से कुछ झिझक होती है लेकिन चल भी जाता है। वातानुकूलित (एयर कडीशन) मे ऐसी बात ओछापन । ऐसा अनुरोध अनसुना रह जाये या रूखा जवाब मिले—इतजाम करके चलना चाहिए था।

छ-सात साल पहले की घटना है। तरक्की मे ब्राच मैनेजर बन गया था। उसके साथ ही सफर के दर्जे मे भी प्रोमोशन। यात्रा केवल चार घटे की। रात साढे ग्यारह बजे बरेली मे उतरना था। पूरे बर्थ की खास जरूरत न थी । निजी काम से या किसी मातहत के साथ न होने पर सेकेण्ड-फर्स्ट मे चला जाता परन्तु कम्पनी के काम से जा रहा था। स्टेनो पहुँचाने आया था और चपरासी साथ। निचले दर्जे मे सफर से कम्पनी की प्रेस्टीज का सवाल था।

वातानुकूलित बोगी मे लगभग आधे कूपे। सभी मे नीचे की सीट पर दो-दो मुसाफिर। यानी प्रति बर्थ एक मुसाफिर। चार बर्थ के केवल तीन डिब्बे। दो मे चारो बर्थ पर मुसाफिर। एक मे केवल तीन फिर। सध्या के साढे सात का समय। एक बर्थ पर पक्की आयु

पुरुष खिड़की की ओर पीठ सटाये अध-पसरा। दूसरे बर्थ पर साडी में युवा छरहरे नारी शरीर का आभास। एक स्त्री गाडी के फर्श पर रखे बक्स पर बैठी थी। चार घंटे ऊपर खाली बर्थ पर लेटे गुजार देना भी मंजूर था परन्तु डिब्बे पर खड़िया से लिखा था—'रिजर्व्ड कम्पार्टमेंट'।

इस डिब्बे के सामने से एक बार गुजर चुका था। पुरुष से आँखें मिली थीं, मेरी स्थिति भी समझ गया था। पुरुष के चेहरे और आँखों में साधिकार वर्जना ऐसी तमतमाहट कि अनुरोध का साहस कठिन। उस कम्पार्टमेंट के सामने से दूसरी बार गुजरा तो पुरुष ने, शायद मेरी आतुरता के विचार से, हाथ के संकेत से टोका, 'प्ले कार्ड्स ?'

स्थिति भांप कर मुस्कान से उत्तर दिया—'ओह, विद प्लेजर।'

'कम इन' पुरुष ने निमन्त्रण दिया।

कुली से अपना सूटकेस भीतर रखवा कर डिब्बे में कदम रखा तो अच्छी ह्विस्की और बढ़िया सिगरेट के धुएं की गंध। पुरुष ने अपनी जगह सीधे होकर अपने बर्थ पर बैठने की जगह दी। ताश की एक गड्डी समीप रखी थी।

पुरुष ताश की गड्डी फेंटते हुए बोला—'रमी।'

'ओ० के०' स्वीकारा। एक बार विचार आया पूछ लूं—कितना प्वाइंट ? परन्तु ओछी बात की झिझक से प्रश्न रोक लिया।

पुरुष ने पत्ते बांटने से पहले बक्स पर बैठी स्त्री की ओर देखकर दो उंगलियां उठा दीं।

स्त्री के शरीर पर अच्छी छपी हुई साड़ी थी परन्तु बैठने के ढंग-मुद्रा से नौकरानी। चेहरे और नाक पर चौड़ी फुल्ली से दार्जिलिंग आसाम की ओर की पहाड़न।

स्त्री ने आदेश पाकर डिब्बे की दीवार पर गिलाम टिकाने के लिए लगी तार की घटोलियो से दो गिलास ले लिये। सुराही से जल लेकर गिलासो को प्लास्टिक की बाल्टी मे खलखलाया। छोटे साफ सफेद तौलिये से गिलासो को पोछा। टिफिन बक्स से बोतल निकाली।

कनखी से देखा, सफेद घोडा स्कान्च थी। उससे अधिक कनखी से देखने का आकर्षण था सामने बथ पर लेटा, साडी मे लिपटा युवा नारी शरीर। अपने समाज के शील के विचार से उधर से नजर हटा ली। एक ही नजर मे दिख गया था—गोरी, छरहरी तन्वागी थी। एक टाग सीधी पसरी हुई, एक घुटना उठा। कोहनी से उठी बाह के हाथ की उगलिया मे थमे सिगरेट से धुए की पतली रेखा उठ रही थी। कलाई से सफेद नग जडी सोने की चूडिया नीचे ढलकी हुई। बाह और चेहरा, हाथ हाथीदात जेसे गोरे। दूसरा हाथ माथे पर रखा, हथेली ऊपर की ओर। मुझ जैसे बेपरवाह कलाकार की कल्पना जैसी सुन्दर, पतले लाल होठ, सुघड नाक पर हीरे की बडी कनी की कील।

नौकरानी ने दो गिलासो मे ह्विस्की डाल कर तन्वागी की ओर देख कर पूछा। युवती ने माथे पर रखा हाथ इनकार मे हिला दिया।

नौकरानी ने थर्मस से दोनो गिलासो मे बर्फ के दो-दो टुकडे डाले। सीट के नीचे से दूसरी टोकरी से लेकर एक बोतल सोडे की खोली। दोनो गिलासो मे आधोआध कर गिलास हमारे सामने कर दिये।

गिलास लेकर धन्यवाद मे पुरुष की ओर मुस्कराया, 'बेस्ट लक।'

'चियर्स!' बिना मुस्कान उत्तर।

ह्विस्की के घूटों के साथ रमी शुरू हुई। सच बात तो यह कि नज़र सामने के बथ से बचाये रखने के प्रयत्न के बावजूद ध्यान मे वही अपूर्व

सौन्दर्य ! परन्तु पत्तो की ओर ध्यान रखना भी आवश्यक था ।

पहले हाथ मे मेरे तीन प्वाइंट बने ।

मुझे कुछ विस्मय—अपनी पत्नी के लिए बात का ऐसा ढग। वह अंग्रजी बोल रहा था । उसने दूसर हाथ के लिए पत्ते मेरी ओर सरका दिये ! मैं फट रहा था । उसने बात शुरू कर दी, कितनी थकावट और बारियत। देहरादून तक चौसठ घटे का सफर । दोपहर बाद तेजपुर से प्लेन मे दिल्ली । रात देहरे के लिए ट्रेन । कितना आसान हो जाता लेकिन उडान के खयाल से इस औरत (उसने दूसरे वथ की ओर सकेत किया) का कलेजा काप जाता है ।

'मेरा नियम है, एक साल सितम्बर मे दार्जिलिंग, दूसरे साल मसूरी। मसूरी मे अच्छी कम्पनी रहती है, पुराने परिचित मिल जाते है । वह कहता गया ।

वह ठहर-ठहर कर घूट ले रहा था ।

मुझे भी उसी तरह अन्तराल से घूट लेते देखकर शिकायत से बोला —'इतना धीमे ? मैं तो साझ से तीन ले चुका । आप लें !

'ठीक है, ठीक है !' उसे धन्यवाद दिया । उस हाथ मे भी मेरे चार प्वाइंट बने । अगले हाथ मे उसे दो प्वाइंट मिले । चौथा हाथ समाप्त होने पर उसने गिलास समाप्त कर मेरी ओर अनुरोध से देखा, 'खत्म कीजिये न !'

उसकी बात रखने के लिए शेष दो घूट मे सब खीच लिया । उसकी नजर के सकेत से नौकरानी ने पहले मेरे गिलास मे एक पेग डालकर बर्फ सोडा दिया फिर उसके गिलास मे बनाने लगी ।

वह नये पेग से घूट लेकर फिर बोला—'चाय बागान की जिन्दगी म

बहुत बोरियत। पाच-छ महीने बाद दो-तीन सप्ताह दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई न घूम आये तो आदमी पागल हो जाये।'

'संगति का अभाव भारी हो जाता होगा। सहानुभूति से कहा।

'इस स्वराज के साथ हम लोगों पर तो मुसीबत आ गयी थी, ये ही जमीन्दारी उन्मूलन!' वह बताने लगा, 'खुद काश्त और बागान के नाम पर कितना बचाया जा सकता था? सौ नही डेढ सौ एकड! अट्ठाईस गाव खोकर डेढ सौ एकड मे कैसे सरता?

'पिता बहुत दूरदर्शी थे, राजनीति की गहरी समझ, राजनैतिक नेताओ से सम्पर्क! अंग्रेजी शासन के समय कांग्रेस को मदद भी देते थे। वो १९४७ के अन्त मे ही समझ गये, जमीदारी अब नही बच सकेगी। गाधी भी उसे न बचा सकेगा। जमीन्दारी सामयिक भावना के प्रतिकूल। अब जमाना इडस्ट्री का है। भगवान ने मौका भी बना दिया। स्वराज होते ही चाय बागान के ब्रिटिश मालिको को कालो का आधिपत्य असह्य। पिता ने अवसर देख जमीन्दारी पर कर्जा ले पहले एक 'सुन्नाल इस्टेट खरीदी तो दस गाव बेच डाले। बाद मे तुरन्त 'बचिया' टी इस्टेट भी खरीद ली। इधर सवा सौ एकड का एक फार्म रख कर सब गाव बेच डाले, जमीन्दारी उन्मूलन का कानून पास होने से डेढ बरस पहले ही अब एक इस्टेट साढे चार सौ एकड, दूसरी सवा तीन सौ। सन् पचास के बाद चाय का बाजार भी बेहतर!'

डेढ घट मे नौ हाथ हो गये थे। मेरे सैंतीस प्वाइट उसके बारह। उसके अनुरोध पर तीसरा पेग भी लेना पडा। नित्य ह्विस्की का शौक अपने बस का नही। साथ सगत मे ली तो प्राय दो पेग से अधिक न लेने की सावधानी।

नौकरानी गिलासो मे ढाल रही थी। उसने अगले हाथ के लिए पत्ते फरफराते हुए मेरे सामने वथ के अभिप्राय से पूछ लिया—'ये औरत कैसी जची ?'

प्रश्न ! जैसे माथे पर पत्थर आ पडा हो। अचक्चाकर उसकी आर देखा। खयाल कौध गया, अपनी पत्नी के बारे मे ऐसा प्रश्न असम्भव ! उसकी और तन्वागी की आयु के अन्तर की ओर भी ध्यान गया।

सम्भल कर कौतूहल से उत्तर दिया—'चमत्कार !'

'दो ही मास पहले इसके लिए साठ हजार दिये है।' उसने नौक-रानी से गिलास हाथ मे लेकर वताया। हम दोना ने तीसरी बार चियस कह कर घूट लिये।

पत्ते चलते-चलते वह बताने लगा, 'दूसरे बाजारा की तरह इस बाजार मे भी दाम चढते जा रहे ह।' वह पत्ता को ध्यान से चलाने के लिए रुक-रुक कर बोल रहा था, 'तेरह बरस पहले वहा पहली लडकी का तीस हजार दिया था। वह सत्रह साल की थी। छ बरस बाद दूसरी के लिए पतालीस हजार। वह उन्नीस की थी। यह इक्कीस से ज्यादा की, पर साठ हजार !'

नये हाथ के लिए पत्ते मेरी ओर बढाते हुए घूट लेकर बाला—'अपनी और औरत की उम्र म मुनमवत का भी खयाल रखना चाहिए। इसके अलावा, एक वक्त पत्नी के अलावा एक से ज्यादा औरत नही वर्ना औरत के साथ इन्साफ नही हो सकता। जब दूसरी ली पहली के नाम बक मे दस हजार जमा कराकर बीस हजार म उसके लिए मकान और खेती के लिए जमीन दे दी। दूसरी के लिए बैंक मे बीस हजार और पच्चीस हजार म जमीन, मकान ! दाम जो बढ़ गये हैं। किसी के साथ अन्याय

नही होना चाहिए । अब भी उनकी जरूरत परेशानी का खयाल रहता है।

ढाई पेग से ज्यादा ह्विस्की पेट मे पहुँच जाने से दिमाग कुछ उड सा रहा था तिस पर न्याय, नैतिकता और औचित्य की धारणा का यह अपरिचित पक्ष ! उस उधेडबुन मे ध्यान पत्तो पर उतना न जम पा रहा था। बीस हाथ तक मेरे प्वाइट बानवे थे और उसके बयालीस परन्तु ट्रेन के बरेली स्टेशन के प्लेटफाम पर रुक्ते समय पचास प्वाइट का अन्तर घट कर बाईस रह गया था। आखो मे गहरा गये लाल डोरो और चेहरे पर शराब के तनाव के बावजूद वह अविचलित, तटस्थ बात करता, खेलता जा रहा था । गाडी रुक जाने पर दो मिनट बाद हाथ खत्म हुआ।

'सगति के आनन्द के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।'

मैं उठना चाहता था। वह मेरा हाथ थाम पेसिल से कागज पर लिखे हिसाब पर नजर डालने लगा। इस बार मुझे दो प्वाइट मिले थे। दो-चार मिनट और ठहरने मे हर्ज न था। बरेली स्टेशन पर एक्सप्रेस पन्द्रह मिनट रुकती है।

मैं मौन था। प्वाइट मैं ही लिख रहा था, उसे दिखाकर, इसलिए मालूम था। उसने नौकरानी की ओर हाथ बढाकर मेरे लिए अबोध भाषा मे कुछ कहा।

अनुमान सरल था, जुए मे हारा पैसा भुगताना चाहता था।

'छोडिये ! छोडिये !' मैं उठ खडा हुआ। उसके रोकते-रोकते भी सूटकेस और टाइप राइटर के लिए कुली को बुलाने कोरीडोर मे बढ गया।

कुली को लेकर लौटा तो वह बटुए से नोट गिन रहा था। बटुए की तरफ न देखकर उससे एक बार फिर सगति और ड्रिंक के लिए धन्यवाद मे हाथ मिलाना चाहा। वह कोरीडारी मे आ गया था। हाथ मे थमे नोट मेरे हाथ मे देने का आग्रह।

चौबीस प्वाइट के लिए मुट्ठी भर नोट! कुछ विस्मय पर समझ लिया, पैसे वाला आदमी है, रुपया प्वाइट खेलने का आदी होगा।

मेरे 'ना ना' कहकर हाथ पीछे हटाने पर उसका आग्रह, 'नही, नहीं! खेल का हिसाब न चुकाना अनैतिक!

मुझसे हाथ मिलाते-मिलाते उसने नोट मेरे कोट की सीने पर जेब मे खोस दिये।

कुली को लेकर रिटायरिंग रूम का रिजर्वेशन किया। सोचा काफी ड्रिंक लिया है, पित्त न बढ जाये, कुछ खा लेना जरूरी है। लेट हो गया था सोचा, स्लाइस-आमलेट ही सही।

रेस्तरा मे बैठकर खयाल आया, सीने पर खुली जेब मे नोट रखना ठीक नही। भीतर की जेब मे रखने के लिए पाकेट मे दो उगलिया डाल कर नोट निकाले, इतने बडे-बडे नोट! क्या पाच-दस के! पाच दस रुपया प्वाइट! माइ गाड!

नोट निकाल कर देखे। शका हुई ह्विस्की के प्रभाव मे ठीक नही देख पा रहा हूँ। आखे मल कर ध्यान से, बहुत ध्यान से देखा, नोट सौ-सौ के चौबीस! पीठ पर पसीने की धारे वह गयी। रूमाल से माथे और चेहरे को पोछा—यदि हार जाता तो! इतना तो सब कुछ दे देने पर भी न बनता, अपना डेढ मास का वेतन!

स्लाइस और आमलेट की प्रतीक्षा मे धक्-धक् सीने से सोच रहा था,

कितना नैतिक व्यक्ति ! चौबीस सौ रुपये का भी मोह नहीं ! अपने सिद्धात का पक्का। यह सामन्ती नैतिकता, जिसे मन भर जाने पर एक के बाद दूसरा तीसरा नारी शरीर मुह मागे दामो खरीदते जाने मे कोई झिझक नहीं।

इस नैतिक बल का आधार उसके दोना चाय इस्टेट पर काम करते अट्ठारह सौ आदमियो का श्रम ! इस नैतिक भुगतान मे उसके प्रति मज़दूर का पचहत्तर पैसे का भाग ।

•

सच्ची पूजा

कहानी क्या घटना ही सुनिये। श्री रघुवर दयाल मिश्र कुछ वर्ष से अवकाश प्राप्त है। सन् १९३१ मे डिप्टी मेजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्ति हुई थी। नौकरी मे स्थायित्व और शीघ्र उन्नति के प्रयत्न के लिये जवानी की कमठ तत्परता की उमग थी, कुछ बढकर दिखाने का उत्साह। दयाल के पिता गत शताब्दी के अन्त मे डिप्टी बन गये थे। उस जमाने मे शासन सेवाए प्रतियोगिता परीक्षाओ से नही, खान्दानी सम्मान, कुल समृद्धि और राजभक्ति के विचार से मनोनीत लोगा को दी जाती थी। दयाल के पिता अवकाश प्राप्त कर चुके थे। उन्होने होनहार पुत्र को अपने अनुभव से शासकीय सेवा मे योग्य विश्वस्त और सफल हो सकने के सब गुर बता दिये थे। जिलाधीश या उच्च अधिकारियो के प्रति विनम्रता और सदा सेवा तत्परता। उच्चाधिकारी के सुझाव या आदेश सगत हा तो आज्ञानुगत मुद्रा म—'हुजूर का हुक्म पूरा होगा। यदि उच्चाधिकारी का आदेश असगत जान पडे, तब भी विनीत तत्पर उत्तर—'हुजूर का हुक्म बजा है। पूरा यत्न किया जायेगा।'

१९३४ मे बरेली के जिलाधीश डी० गाडन थे। गोडन अनुशासन और न्याय के प्रति यथासम्भव शब्दश सतक परन्तु स्वभाव मे कृपा

और जन साधारण के लिए सहानुभूति। उन दिनो नगर मे विकट समस्या उठ खडी हुई। शनै शनै बरेली नगर मे साडो की सख्या बहुत बढ गयी। जैसे वन का राजा सिह अपने जगल मे प्रतिद्वन्दी नही सह सकता, वैसे ही कोई साड अपने क्षेत्र मे दूसरे साड का प्रवेश या किसी अवसर का उपयोग क्षमा नही कर सकता।

आहार की अनिश्चित व्यवस्था और कधो और पीठ पर किसी काम का बोझ न होने से नन्दी के वशजो की अपूण आवश्यकताए और निष्क्रिय शक्ति नागरिको के लिये सकट बनने लगी। साड जिस-तिस हलवाई, कूजडे की दूकान पर मुह मारते फिरते। उन्हे लाठिया, इटो के प्रयोग से रोकने या खदेडने के प्रयत्न पर साम्प्रदायिक उत्तेजना की सम्भावना हो जाती। इससे भी विकट स्थिति बन जाती, जब किसी गली, बाजार या मडी मे विशालकाय साड क्षेत्र की प्रतिद्वन्द्विता मे भिड जाते। बाजारा, मडिया मे भगदड मच कर दुकाने बन्द हो जाती। भगदड म या साडा के धक्को से अनेक नागरिक चोटे खा जाते। ऐसी स्थिति मे एक बालक और दो बूढे जाने खो बैठे थे। साडा के सघर्ष मे कुचले जाने वाला मे एक जरजीण मौलाना भी थे। इस सकट मे साम्प्रदायिक भावना का पुट लग जाने से स्थिति और गम्भीर हो गयी। एक सम्प्रदाय का प्रतिनिधि मण्डल जिलाधीश तक पहुँचा। पशुआ के निरकुश विहार और उच्छृ-खलता से नागरिको की आपदा और मृत्यु गोडन को स्वय असह्य परन्तु समस्या से गौवश का सम्बध माना जा सकने की सम्भावना से स्थिति नाजुक थी।

गोडन ने स्थिति के उपाय पर विचार के लिए तीनो डिप्टी मैजिस्ट्रेटो को बुलाया। गोडन सहृदय और अहिसक प्रकृति के थे परन्तु ब्रिटिश शासन

नीति मे निष्णात। किसी भी समस्या म साम्प्रदायिक भावना की छाया का आभास देखते तो उसके समाधान के लिये स्वय निर्लिप्त रह कर हिन्दुस्तानी अफसरो को आगे रखते।

गार्डन न तीना डिप्टी मजिस्ट्रेटो को बहुत क्षोभ से सम्बोधन किया 'आप लोग क्या देखता है। किसी सभ्य देश मे पशुओ द्वारा नागरिको मे इस प्रकार विनाश की कल्पना नही की जा सकती। इस हालत म भी आप लोगो के काना पर जू तक नही रेगती। चार दिन के भीतर किसी बाज़ार-मण्डी म एक से अधिक साड नही रहना चाहिए। मरखने साडो का तुरन्त उपाय किया जाये।

गार्डन ने अपना सुलगता सिगार दयाल की ओर उठाया—'तुम सिटी मैजिस्ट्रेट हो, यह जिम्मेवारी तुम्हारी।'

दयाल एक ही उत्तर दे सकते थे—'यस सर, पूरा यत्न किया जायेगा।

दयाल ने तीसरे पहर नगर और उपनगरो की नौ पुलिस-चौकियो को आदेश दे दिये, प्रत्येक चौकी से दो-दो सबल साहसी सिपाही अपने-अपने इलाके से दस-बारह मजबूत हिम्मती जवानो के साथ अमुक-अमुक बाजार, चौकी, मडी के नाको पर लाठिया और मजबूत रस्सिया लेकर रात के साढे नौ बजे जरूरी हुक्म की तामील के लिये हाजिर रहे।

रात बाजार बन्द होते-होते दयाल स्वय घोडे पर सवार निकले। सभी मौको पर तनात सिपाहियो और उनकी लठैत कुमक को हुक्म दिया—जिस गली, बाजार, चौक, मडी मे साड या छुट्टे-बैल-बछडे दिखायी दें, उन्हे बिना किसी दया-माया के हाककर और बाधकर नगर के बाहर लालकुआ और रामनगर की सडको पर बीस मील दूर जगलो मे हाक

दिया जाये। दयाल निरीक्षण के लिये स्वय घोडे पर साथ रहे। साडो का निष्कासन करने वाली कुमुक दूसरे दिन आधी रात बाद नगर लौट सकी।

तीसरे दिन गोडन ने स्वय नगर का मुआइना किया। दयाल की सूझ और क्षमता के लिये मुस्कान से प्रशसा का पुरस्कार दिया।

तीन दिन बाद जगलो म निष्कासित साड चार-चार, पाच-पाच की टोलियो मे नगर लौटने लगे। सप्ताह के अन्त तक नगर मे फिर साडो की उतनी ही सख्या और वैसा ही उपद्रव।

जिलाधीश ने दयाल को फिर याद किया। गोडन के चेहरे पर क्रोध की तमतमाहट—'यह ही तुम्हारा उपाय और प्रबन्ध था। इन्साना की खुराक इन्सानो को खा रही है। सरकार ऐसे ही प्रजा की रक्षा करेगी। तुम्हारे मजहब का लोग बावेला करेगा नही तो हम सब आवारा साडो को गोली-दम करवा देता। यह जुल्म नही चलेगा। 'आप कैसे वाला, सब ठीक हो गया?'

गोडन के क्रोध से दयाल की पीठ पर पसीने की धारे बह गयी परतु भयकर सकट मे मस्तिष्क मे सूझ भी कौध गयी 'ठीक है सर, हुजूर मजूरी द तो फालतू आवारा साडो को जिना और सेट्रल जेल मे बन्द करवा दिया जाये।'

गोडन के क्षोभ मे विस्मय की त्यौरिया—'होश मे हो? भारतीय दड विधान की किस धारा के अन्तगत साडो पर मुकदमा चलाकर उन्हे कैद किया जा सकता है?

दयाल ने उत्तर दिया 'सर मुकदमे की जरूरत नही है। जेल नही, आवारा साडो की रक्षा-परवरिश।'

गोर्डन को विस्मय—'क्या कह रहे हो जवान ?'

दयाल ने सुझाया—'हुजूर, जेलो मे तेल पेरने के कोल्हू हैं, आटा चक्किया हैं, खेती की सिंचाई के लिये चरसे चलते हैं। इन सब कठिन कामो को कैदी करते है। साडो को जेलो मे बन्द करवा दिया जाये। दो दिन भूखे रहकर सीधे हो जायेंगे। उन्हे कोल्हुओ, आटा-चक्कियो और चरसो मे जुतवा दिया जाये। जेलो मे उनके लिये पर्याप्त चारा-घास। इन्सान कैदी इन्सानो के लायक काम करें, बैल बैलो का।'

'गुड। गोर्डन समर्थन मे मुस्कराये—'जवान तुम ज़हन रखता है।'

उसी रात गोर्डन की मजूरी और दयाल के निरीक्षण मे आवारा साडो-बछडो को हाक-बाध कर जेलो मे बन्द करने की योजना आरम्भ हो गयी।

नगर मे साडो के सहसा गायब हो जाने से गली, बाज़ारो, चौकों, मडियो मे सुविधा शान्ति थी। परन्तु नगर के बहुसख्यक सम्प्रदाय मे अनेक आशकाओ से असन्तोष और क्षोभ फैलने लगा। अफवाहे उडने लगी, बेचारे साडो को जेलो मे भूखा रखकर और निर्दयता से पीट-पीट कर जोता जा रहा है। विधर्मी सरकार गोरी फौजो और विधर्मियो के लिये गोवश को कसाई-खानो मे भेज रही है। धर्मप्राण हिन्दुओ के प्रतिनिधि मण्डल ने इस विषय मे जिलाधीश को आवेदन दिया।

गोर्डन आवेदन से कुछ चिन्तित हुए। दयाल को याद किया—'जवान हमे तुम्हारी सूझ-समझ पर भरोसा है। तुमने साडो के सकट का उपाय किया अब साड-पूजा का भी उपाय करो। हम उसका खयाल करेगा। हम कल ही उत्तर के दौरे पर जा रहे है। शहर तुम्हारे हवाले। इस प्रतिनिधि मडल से तुम्हे तुरन्त मिलना होगा।

डिप्टी दयाल ने हिन्दू प्रतिनिधि मण्डल को भेंट के लिये आदर से अपने बगले पर प्रात आठ का समय दिया।

अदली ने साहब के पूर्व आदेश से अभ्यागतो का हाथ जोडकर स्वागत किया उन्हे ड्राइगरूम मे बेठाकर निवेदन किया—साहब पूजा मे है। अभी आते है। अभ्यागतो के लिये चमचमाते गिलासो मे जल और थाल मे पान-सुपारी पेश किये गये। लगभग घटे भर अर्दली आगतो को तसल्ली देता रहा—साहब पूजा से उठने ही वाले हैं।

डिप्टी दयाल नौ बजे के कुछ बाद—'शिव-ओम' शिव-ओम' सिमरते बैठक मे प्रकटे। माथे पर पूजा के समय का रोली-अक्षत का झक-झक टीका, शरीर पर केवल सफेद धोती, कधे पर मोटा जनेऊ। अभ्यागतो से प्रतीक्षा के कष्ट के लिये खेद प्रकट करके सेवा के लिये जिज्ञासा की।

प्रतिनिधि लोग कर्मकाण्डी ब्राह्मण डिप्टी साहब के भक्तिभाव से प्रभावित थे। सुनी सूचनाए या अफवाहे निवेदन की—देवाधिदेव महादेव के वाहन नन्दी के वशज साडो की प्राणरक्षा, और उन्हे जेलो मे अत्याचार से मुक्त कराने के लिये धमरक्षक प्रजापालक सरकार के प्रतिनिधि से प्राथना की।

डिप्टी दयाल ने 'शिव-ओम, शिव-ओम' उच्चारण से विस्मय और क्षोभ प्रकट किया। घृणित अफवाहो को झूठ और राजद्रोह बताकर आश्वासन दिया, 'ब्रिटिश सरकार सभी सम्प्रदायो की धार्मिक भावनाओ और स्वतन्त्रता का विचार और रक्षा करती है। जिला मजिस्ट्रेट साहब को और हमे बाजारो मे गोवश को जूठे-सूखे दोने-पत्ते, कागज-कपडा, कूडा-कचरा खाते और निदयी लोगो से ईंटो और लाठियो से मार खाते देखकर दुख हुआ। उनके लिये उचित चारे-दाने का प्रबन्ध कर दिया

गया है। आप मे से जो पच चाहे, हमारे साथ चलकर उनकी हालत देख ले। जैन कैसी ? नन्दी के वशज मरकारी मेहमान है। हरा चारा, ताजी पेरी सरमो की खली, भर पट। देखिये, उनके बदन कैसे गदरा गये है। मजे-मजे काम करते आख मूदे जुगाली किया करते है। शिव-ओम। शिव-आम।

एक साहसी प्रतिनिधि ने आपत्ति की—'पडित जी, भगवान को अर्पित नन्दी के वशजो से सेवा लेना ही हमारी धर्म भावना को ठेस पहुचाता है ?

'शिव-आम।' दयाल बोले, हलो और लढिया मे जुतने वाले बैल भी गोवश से नन्दी के भाई। नन्दी भगवान की पूजा ही इसलिये कि वे महादेव की सवारी सेवा करते हैं। सृष्टि मे किसी भी जीव को उचित उत्पादक सेवा और सन्तुष्ट-आहार का अवसर देना ही उसका सच्चा आदर और सच्ची पूजा।' दयाल साहब ने 'शिव-ओम' उच्चारण से भक्ति भाव मे नेत्र मूद आकाश की ओर हाथ जोड दिये।

●

कौन जाने ?

मैं शुरू से बताती हूँ।

रिटायर होने के पहले नानाजी को बगला बैंक से मिलता था। उसके साथ फर्नीचर, पर्दे, पखे, लैम्प जैसी चीजें और दो अदली। बगले के चारो ओर एकड भर जगह मे बाग-बगीचा। बगीचे के रख-रखाव और माली का खर्च भी बैंक से। नानाजी को फुलवाडी-बगीचे का शौक शुरू से व्यसन जैसा रहा। स्वय बताते हैं, बगीचे पर बैंक से निश्चित से अधिक खच हो जाता तो अपनी जेब से दे देते। तरह-तरह के गुलाब, डालिया, ग्लेडियोनी, कार्नेशन, क्रोटन और दूसरे सजावटी पौधे बगलोर, पूना, सिक्किम, शिमला, पूसा और मेरठ की नसरियो से मगवाते रहते। एक बार ग्लेडियोनी और लाला (ट्यूलिप) की गाठें हालैण्ड से मगवायी। पौधो पर कलम या कल्ले बाधते और खादो के प्रयोग करते रहते।

नानाजी ने रिटायर होने से दो बरस पहले ही इस कालोनी मे यह मकान बनवा लिया था। मकानियत से तिगुनी जगह फुलवाडी-बगीचे के लिये रखी। मकान की छतें और फश बन रहे थे और लकडी का काम जारी था तभी माली लगा लिया था। गोरखपुर से आकर लॉन और क्यारियो की दागबेल स्वय डलवायी। तीसरे-चौथे सप्ताह आकर निरीक्षण

कर जाते । सब काम मनमाफिक और स्तरीय हो, इस निगरानी के लिये सेक्रेटेरियेट मे रिटायर हमारे फूफा जी को एक नौकर देकर यहा टिका दिया था । फूफा जी ने अपनी समझ से सामने के लॉन के अत मे तीन पेड दसहरी आम के, दो अमरूद के और पिछवाडे दो कटहल लगवा दिये थे। नानाजी ने देखा । तो पेड तुरन्त निकलवा दिये । फूफा जी से बोले, इतने पेडो मे घर की, साल भर की जरूरत पूरी तो हो न जायगी । बाजार से खरीदना पडेगा ही । फल, तरकारी बाजार मे मिलते है । यह कुछ जगह मनभावन फूल-पौधों के लिये ही रहे ।

यो तो पास-पडोस के लोग और आने-जाने वाले अब भी हमारे लॉन और बगीचे को सराहते नहीं अघाते परन्तु कुछ बरस पहले और ही बात थी नौ बरस पूर्व जब मै सट मेरी मे पढने के लिये आयी, तब भी नानाजी फरवरी-मार्च मे महीना भर नये गुलाब बाधने मे लगे रहते । ग्लेडियाली, डालिया और नरगिस की गाठे सिक्किम और रानीखेत से मगवाते । मकान के चारो ओर कितने गुलाब थे और कैसे-कैसे लोग उनके रगीन फोटो ले जाते । मुझे भी गुलाब की कितनी ही किस्मो, क्रिमजनग्लोरी, कॉनफीडेंस, मिराण्डी-विरागो, माटेज्यूमा, क्राइमनर, रूजवेल्ट, नेहरू आदि चालीस-पतालीस गुलाबो की परख-पहचान हो गयी थी । बगीचे मे इतने फूल होने पर भी कमरो म सजावट के लिये या मित्रो के यहा भेजने के लिये फूल नानाजी कैंची लेकर स्वय काटते या माली से अपने सामने कटवाते, इस ढग से कि क्यारियो की रौनक फीकी न पडे । कभी नीला दीदी और मैं कोई खास फूल सिर मे लगाने के लिये चुपके से काट लेती तो नानाजी की नजर से बच न पाता । कद्रदानो को फूल-भेंट कर बहुत सन्तोष पाते । हम लोग अपनी टीचर्स के जन्मदिनो पर या चर्च मे सर्विस के समय ऐसे

और इतने फूल ले जाती कि हमारी धाक बधी थी। लेकिन आवारा लड़के लुक-छिप कर फूल तोड़ ले जायें या चारदीवारी की तारो पर छायी बोगनवेलिया, अलमडा, टिकोमा, नित्यमल्लिका के फूल नोच ले तो नानाजी धमकाते—फिर ऐसा किया तो तुम पर कुत्ता छोड़ देंगे।

नानाजी पेंशन टैक्स कटने के बाद आठ सौ ही पाते थे। सोच-विचार कर व्यवसाय मे लगायी, बचत पूजी पर, लाभांश का बड़ा सहारा था, अधिकतम लाभ और विश्वस्त व्यवसाय के विचार से नानाजी ने अपनी बचत रकम का तीन चौथाई, अपने सहपाठी, घनिष्ठ मित्र, खानदानी व्यवसायी रईस की पुश्तैनी चोब कम्पनी मे लगा दिया था। ग्यारह बरस तक वह धधा सन्तोष और उत्साह-वर्धक रहा। सन् ७२ तक नानाजी का ढग अफसरी के समय के स्तर से नीचे न आया था।

१९७० मे नानाजी के मित्र की अकस्मात अकाल मृत्यु के बाद ७१-७२ मे चोब कम्पनी पर जाने कौन मुसीबतें, भाइयो-भागीदारो मे झगड़े, उसके साथ प्राकृतिक और राजनैतिक कारणो से भी आ पड़ी कि लिमिटेड कम्पनी ने दिन मे दिया जला दिया। कम्पनी के दिवाले के दिये की लौ मे नानाजी का मुख्य सहारा भी फुक गया।

सब जानते हैं, कई बरस से रुपया लगातार मिट्टी होता आ रहा है। पहले एक रुपये मे बहुत कुछ मिलता था, अब दस-बारह मे भी उतना नही। तिस पर नानाजी के सहारे के मुख्य स्तम्भ गिर जाने का धक्का। लीला बहिन का ब्याह जनवरी ७२ मे हुआ। निर्मल मामाजी बम्बई मे 'पद्मराज ग्रियर्सन' मे इजीनियर है। वहा फ्लैट का किराया ही ६ सौ मासिक। छोटे बेटा-बेटी महगे स्कूलो मे। ब्याह दहेज सब नानाजी को निबाहना पड़ा। नानाजी ने अपनी जानी-मानी हैसियत के अनुकूल निबाहा

था। उसके महीना बाद मोटर बनारस, हमारे यहा भिजवा दी और ड्राइवर की छुट्टी कर दी। सभी नानाजी के सहसा टल जाने की बातें कहने लगे।

नानाजी हर बरसात में पुराने पड गये गुलाब निकलवाकर नये लगवाते रहते थे। इस साल नये गुलाब न आये। तरकारियों के दाम पहले से ढाई-तीन गुना हो गये थे। पिछवाड़े की क्यारिया में गुलाब निकलवाकर वहा सब्जिया बो दी गइ। क्यारियों की गोटों पर सस्ते किस्म के सदाबहार वर्बेना, पिटूनिया, डिमान्थस बने रहे। पिछवाडे उत्तर की चारदीवारी के साथ ऊचे-ऊचे हॉलीहॉक की जगह मक्का के भुट्टे सुनहली रेशम कातने लगे या बरसाती ऊची भिण्डिया के फूल टहकने लगे। अगल-बगल, पूर्व-पश्चिम भी जेस्मेमिशिया, विनिस्टा, स्टेला की जगहे लौकी, तुरई, सेम, लोभिया लने लगे।

चेहरे पर झुरिया का रोक सकना तो नानाजी के बस का न था। परन्तु बात-चीत मे चिन्ता-अवसाद प्रकट न होने देते। लौकी, कुम्हडे, तुरई और सेम की बेला और मटर की क्यारियो की ओर सकेत कर कहते—'वाह! यह क्या अलमडा, टिकोमा, विनिस्टा और थनबर्जिया से कम है। यह फूल केवल दो दिन का दिखावा नही, जीवन पोषक सार्थक फल बन जाते है।

'इस साल अप्रैल मे ईस्टर से पहले बृहस्पतिवार सिस्टर जीरोना ने स्वय आकर नानाजी से अनुरोध किया— आप सदा अवसर पर सहारा देते है। ईस्टर सर्विसेज (पूजाओ) के लिये हमे अधिक फूलो की जरूरत होती है। खासतौर पर सफेद और गुलाबी ईस्टर लिली आपके यहा ही है—

नानाजी ने माली को पुकार कर स्वय फूल कटवाये। जब तक सिस्टर ने स्वय गद्‌गद कठ से 'पर्याप्त ! पर्याप्त ! धन्यवाद !' न कह दिया फूल कटवाते गये। बाह भर गुलाबी और सफेद लिली के हाथ-हाथ भर के डण्ठल। गुलाब अप्रैल मे उतने अच्छे रह नही जाते फिर भी काफी दिये। आसमानी रग की डेजी की फूल लदी छडिया, लाल-पीले और केसरी रग के ककमजन के भारी-भारी गुच्छो की टहनिया नित्यमल्लिका के बडे-बडे गुच्छे भरी लतरो के टुकडे। मिस्टर कॉन्वेट का माली साथ लायी थी। परन्तु इतने फूल ले जाने के लिये रिक्शा जरूरी हुआ।

'मैं सिस्टर को रिक्शा पर बैठा कर सडक से लौटी तो नानाजी लॉन म ही थे। चारो ओर नजर डालने पर मेरे मुख से निकल गया—'हाय, कितने फूल एक साथ कट गये, सूना-सूना लग रहा है।

'कोई बात नही बेटा,' नानाजी सान्त्वना के लिये बोले, तुम्हारी सिस्टम को और ईस्टर पूजा के लिये गिरजा जाने वाले वयस्को को धूम-धाम से पूजा का सन्तोष होगा। फूल देव-पूजा मे लगकर साथक हो गये।'

अगले सुबह कालिज नही जाना था। अभ्यास से नीद सूर्योदय से काफी पहले खुल गयी। बाहर आयी तो नानाजी लॉन मे कुर्सी पर बठे ताजा अखबार देख रहे थे। बरामदे के आगे बोगनवेलिया के वितान और चारदिवारी की काटेदार तारो पर फैली धीमा, केली कैम्पबेल, नित्य-मल्लिका और बेगनोनिया की बेलो मे बुलबुले चहचहा रही थी। मै चप्पल एक ओर छोड, ओस भीगी घास के शीतल स्पश के लिये लॉन मे टहलने लगी। गेट पर ताला न था। फाटक उडके हुए थे। बेलन भी न लगी थी। अनुमान हो गया, महरी आयी होगी और माली दूध के लिये गया होगा।

उसकी झोली छुडा ली । झोली मे तीन-चार मुट्ठी फूल थे । बिना डण्ठल फूल, उगलियो से मरोड कर या टहनियो को सूतकर तोडने से कुछ मसले-कुचले मे डियाथम, पिटूनिया, डेज़ी के मिले-जुले फूल । बीच मे पिछवाडे शेष रह गये पेडो से डण्ठल मरोड कर तोडे हुए बेरौनक तीन-चार गुलाब और नित्यमल्लिका के गुच्छो से नोचे हुए फूल ।

माली ने अवधी के नागरी उच्चारण मे कहा—'हम जानत रहे, हम दूध लेने जात है तभी ई और ई का बहिनी फून तोड ले जात है । इनकी मा और दोनो बहिनी ऐसी ही थोरी-थोरी फूल चुराती ह । बाप माला इनका रिक्शा चलात रहा । ट्रक से अक्सीडेण्ट मे आडे वठा । मा बेटी चोरी से फूल बटोरती है । महरा साला चोरी के फूल अलीगज के बडे मन्दिर के सामने बेचता हे । भगवान की पूजा के लिये चोरी के फूल । माली ने क्रोध मे फून गुनिया की झाली से गिरा दिये ।

सुनकर अच्छा नही लगा । कहा—माली दादा, ऐसे तोड-मसल फूल हमारे किस काम के ! ले जाने दो ! गुनिया को डाटा, 'आज माफ किया । फिर ऐसे चोरी करेगी तो पीट-पाट कर पीठ सुजा देगे !

'नही बिटिया जी,' माली बोला 'इ का अस न जाय देव' हमई इसका थाने पहुँचाई । एक लोग फूल भगवान की पूजा मे चढावत हे ई ससुर चोरी का फूल 'पूजा के लिये वेचत ह ।'

'क्या है ?' नानाजी अखबार हाथ मे लिए बढ आये थे । मामला उन्होने सुन लिया था परन्तु माली ने गुनिया की चोरी बखान कर कहा, ई का फून न ले जाय देव । हम ई चोट्टी का जरूर पुलिस मे देव । हजूर चौरी मे फून धर देव ।

'जाने दो चौधरी' नानाजी बाले 'बेचारी मुसीबत मे है । किसी तरह

बिना रोमास

जी० पैडले और टी० लेंगले इडियन सिविल सर्विस मे साथ ही भर्ती हुए थे। कद-कामत मे दोना बहुत कुछ एक जसे परन्तु प्रवृत्ति और प्रकृति से बहुत भिन्न। दोनो इगलड के रॉक्बरी कसबे के पडोसी, प्राय समवयस्क आरम्भिक शिक्षा मे सहपाठी। पेडले भारत आकर, तब सयुक्त प्रान्त के पश्चिमी जिले मे ज्वाइट मैजिस्ट्रेट बना और लेंगले कुमाऊ के जगलात मे डी० एफ० ओ०। लगले प्राय ही गहरी बरसात मे तीन-चार सप्ताह का अवकाश पैडले के यहा बिताता।

पैडले के यहा रहते समय लगले सूर्यास्त के समय अफसरो के क्लब म पहुँच जाता। अँधेरा गहराने तक टेनिस-लॉन मे। उसके बाद आधी-रात तक ह्विस्की, डिनर और ताश। पेडले दिन का काम निबटा कर कचहरी से कुछ विलम्ब से लौटता। सध्या की चाय प्राय सूर्यास्त के समय। पैडले के लिये क्लब जाना भी दिल बहलाव नही ड्यूटी का ही भाग था, जब कभी दूसरे अफसरो मे आमने-सामने परामश जरूरी होता वर्ना मौसम के अनुसार तीन-चार मील पैदल सैर के लिये निकल जाता। कभी घोडा कसवा कर कुछ मील सवारी का व्यायाम। उस समय अनायास कोई मुआयना भी हो जाता। सध्या खाने से पहले या बाद कोई

पत्र-पत्रिका, पुस्तक देखता या किसी से विशेष भेंट परामश।

पैंडले के यहा १६३४ से नगले का आना-जाना बढ गया। उस वप पैंडले बरेली म जिला मजिस्ट्रेट बन गया था और लैंगले कुमाऊ में जगलात का कजर्वेटर। खास कारण था, लैंगले का माथा बोल्टन से विवाह। मार्था और लगले का विवाह आठ-दस मास पूर्व कलकत्ता मे हुआ था। परन्तु पैंडले और मार्था का सप्ताह भर का परिचय ही प्रकृतियो के साम्य से सौजन्य की मैत्री बन गया। मार्था को भी ह्विस्की, नाच, ताश म रुचि न थी। लगल के साथ नित्य क्लब जाना उसके लिए ऊब बन जाती। सप्ताह म दो, कभी तीन बार भी सध्या पैदल या घोड पर पैंडले के साथ सैर को निकल जाती। कभी दोनो बैठक म बैठ पत्र या पुस्तक म पट प्रसग पर बात-चीत करते रहते।

पैंडले स्वभाव से मित्रो के भी निजी मामलो को सूघने, झाकने से दूर रहता था। लगले और मार्था विवाह के बाद पडले के पाहुने बने तो उन्हें विवाह के लिये बधाई जरूर दी—'लैंगले तुम अडतीस लाघ रह हो। औपनिवेशिक चाकरी के वनवास में तुमने योग्य जीवन साथी के लिये सब्र से इतजार किया। बधाई, तुम्हारे सब्र का उचित और भरपूर फल मिला। मिसेज लगले को भी प्रतीक्षा से योग्य साथी पाने के लिए बधाई।'

लगले हस दिया—'तुम्हारी परख और सब्र तो बड कडे है। क्या मौन्क (आजीवन अविवाहित साधु) बनने का व्रत ले लिया है?

पैडले हसने के बजाय गम्भीर हो गया—व्रत लेने की नौबत ही नही आयी। मनुष्य की प्रवृत्ति और योग्यता ही उसके लिये अवसर बनाते हैं। फिर मुस्कराया—'रोमास शायद मेरे रक्त मे नहा। रोमास के नाटक

के बजाय ठोस धरती पर कदम जमाये रखने मे ही खैरियत ।'

अगस्त की गहरी बरसातो के दिन थे । पिछली रात और तीसरे पहर तक बरस कर बादल फटे थे । बरस कर हलके हो गये बादल क्षितिज पर पसरे सूर्यास्त के समय क्षण-क्षण रग बदल रहे थे । बहुत सुहावनी बयार थी । पैडले ने सध्या की चाय लेते समय साईस को घोडा कसने का हुक्म दे कर मार्था से पूछा, शहर के बाहर धुली हवा की ताजगी की बानगी लेना चाहोगी ? मार्था ने सुझाव का सोत्साह स्वागत किया ।

उससे पूर्व पैडले के कौतूहल के बिना ही मार्था जब तब छुट-पुट वाक्यो मे अपना कुछ पूर्व परिचय दे चुकी थी । मार्था के पिता डानाल्ड वोल्ट भारत मे 'ओशन्स ट्रासपार्ट' के भागीदार मैनेजर थे । कलकत्ता मे उनका जूट का कारोबार भी था । इगलैड आते-जाते रहते थे । अपने राष्ट्रीय रक्त और सास्कृतिक शुद्धता के लिये मार्था और उसके छोटे भाई जिम वोल्ट के जन्म और अधिकाश शिक्षा-दीक्षा इगलड मे ही हुई थी ।

उस सध्या पेडले और मार्था सैर के लिये घोडो पर बरेली छावनी से पक्की सडक पर दूर तक चले गये । मार्था किसी पुराने प्रसग के उल्लेख से बताने लगी—आपका अनुमान गलत नही था कि मै लगभग बत्तीस की हूँ परन्तु यह मेरा दूसरा विवाह है । बाईस की आयु मे साहित्य मे बी० ए० किया तब विचार था, विवाह न कर अध्यापक बनी रह कर ब्रिटेन मे बस जाने का परन्तु कम्ब्रिज के एक अध्यापक की सगति मे सब बदल गया । हम लोगो ने नौ मास मे ही विवाह कर लिया । डेढ बरस मे ही डिक्सन और मेरे स्वभाव के विरोध एक दूसरे के लिए असह्य होने लगे और इतने कि हम दोनो एक ही बात मे सहमत हो सके, हम

परस्पर अनुपयुक्त है, तलाक ले लेने मे ही शान्ति ।

मार्था घोडे पर थी परन्तु रुक-रुक कर बोल रही थी जैसे तेज चलता व्यक्ति दम फूल जाने से सास ले-ले कर बात करता है ।

मार्था साम लेने के लिये क्षण भर रुकी थी कि पैडले ने कह दिया—'मुझे उस तरह का कोई अनुभव नही परन्तु वह सहमति ही समझदारी थी । अगूर के रस का गिलास सिरका बन जाये तो उसके घूट इसलिये भरते रहना ठीक नही कि अगूर का रस समझकर लिया था ।'

मार्था ने समथन मे सान्त्वना का गहरा सास लेकर कहा—'हमने कानूनी पृथकता ले ली । आकर्षण मे दूरी दरद बन जाती है परन्तु विकर्षण मे सामीप्य भयकरतम यातना । डिक्सन के प्रति विरक्ति से इगलड की सुहावनी लगने वाली परिस्थितिया मेरे लिये असह्य हो गयी । उस यातना से दूर भाग सकने के लिये नौकरी छोडकर पिता के यहा भारत आ गयी । उस सम्बन्ध को चेतना अपने प्रति असह्य ग्लानि बनी रहती । तीन वर्ष की कानूनी अवधि पूरी कर मानसिक यातना से मुक्ति के लिये इगलैंड जाकर तलाक ले लिया । तब लगा, बदरा से उबर कर स्वस्थ वायु का सास पाया ।

पेडले ने गम्भीर निश्वास से समथन किया—'जीवन भावुकता के परो पर नही, अनुभव के कदमो पर चलता है । लोक निन्दा से आतकित न होकर साहस से सत्याचरण के लिये आपका आदर करता हूँ ।

फर्लाग भर घोडे पर मौन रहने के बाद मार्था फिर बोली—सन् १९३२ के क्रिसमस से कुछ दिन पूर्व कलकत्ता मे 'थ्री हडरेड क्लब' मे लगले से प्रथम परिचय हुआ था । उसका सीधा, निश्छल व्यवहार मेरे चुटियाये मन पर ठडे लेप की तरह लगा । फरिश्ता होने का दम्भ नही,

बन मानव। चार-पाँच बार भेंट के बाद नित्य सध्या मिलन। लैंगले पन्द्रह दिन का अवकाश बढाकर आधी जनवरी तक कलकत्ता टिका रहा। उसके कलकत्ता छोडने से पूर्व हम वचनबद्ध हो गये।

पैडले ने हुङ्कारा भरा—'हा, याद है, ३३ की बरसात मे लगले ने अक्तूबर मे अपने विवाह के अवसर पर दार्जिलिंग आने का निमन्त्रण दिया था परन्तु कमिशनर ग्रीव्म नाटन के अस्वस्थ होने के कारण उसका भी काम मुझे सम्भालना पड रहा था। मुझे अवकाश न मिल सका।

मार्था बोली—'लैंगले और आपके परस्पर भरोसे और मैत्री से अधिक समाधान हुआ। व्यक्ति के मित्र उसके चारो ओर लटके आईने होते है। किसी को पहचानने का सबसे अच्छा माध्यम उसके विश्वस्त मित्र।'

पैडले ने समथन किया—'आप दोनो को सतुष्ट देखकर बहुत अच्छा लगता है। बीते को विसारिये। भूल को पहचान लेना ही समझदारी। भूल से तुलना बिना सही क्या ? शरीर पर लगा मैल धो देना स्वास्थ्य-कर वैसे ही मन से मेल का बोझ दूर कर देना उचित।

लैंगले दम्पती प्रतिवर्ष गहरी बरसातो मे या कभी लखनऊ-कलकत्ता आते-जाते दो-चार दिन के लिये बरेली मे पैडले के पाहुने रह जाते।

पैडले मितभाषी था परन्तु चरम चक्षु और मानस चक्षु दोनो ही तीक्ष्ण। लैंगले और मार्था के चौथी बार आने पर उसे दोनो के ऐक्य की ऊष्मा मे कुछ शैथिल्य लगा। मार्था कुछ उखडी-उखडी सी थी। जैसे कुछ कहना चाहती हो परन्तु आत्मदमन से मौन। एक सध्या मार्था अन-मनी-सी बोल गयी—'जिन्दगी क्या खाने-पीने, पहनने, खेलना ही है। उसका कुछ प्रयोजन नही।'

पेडले को लगा जैसे एक वाक्य मे लैंगले का परिचय। मार्था की खिन्नता के लिये एक सहानुभूति भी और मित्र दम्पती के सम्बन्ध के लिये खेद। पेडले औचित्य के विचार से वह सब अजाना किये रहा। सन् १९३५ तक लंगले दम्पती बरेली मे पाँच बार पैडले के पाहुने रहे। फिर पैडले को लैंगले दम्पती का कोई समाचार न मिला। पेडले की शासन कार्य मे सदा व्यस्तता और कुछ आत्मतुष्ट प्रकृति के कारण निजी पत्र व्यवहार उसका बहुत कम था।

१९३७ फरवरी मे पैडले लखनऊ का जिला मैजिस्ट्रेट हो गया। लखनऊ जम जाने पर बरसात मे पहले ही उसने लैंगले को लिखा—जानते हो, लखनऊ मे बरेली की अपेक्षा सभी प्रकार की सुविधा है। रोचक और पार्कों का नगर। कई क्लबें, अपेक्षाकृत अधिक रंगीली और सम्पन्न। केवल योरूपियनों के लिए छतर मंजिल क्लब भी। जिला मैजिस्ट्रेट का निवास भी खूब बड़ा और सुविधाजनक। आप लोगो का स्वागत।'

लंगले का उत्तर मिला—'निमन्त्रण के लिये धन्यवाद। लासन ने लिखा है, वह देहरादून आ रहा है। हमारी योजना है, घोड़ो पर देहरादून से चकरौता, मसूरी, शिमला और शिमला से कुल्लू-मनाली तक की यात्रा। मार्था गत सप्ताह कलकत्ता चली गयी है। उसकी इच्छा दो-अढाई मास माँ के साथ दार्जिलिंग मे बिताने की थी। हम दोनो का धन्यवाद।'

पैडले के अनुभवी शासक के मस्तिष्क में खटका—नैनीताल से कलकत्ता—जाने का मार्ग लखनऊ के सिवा अन्य कौन ? लंगले ने पत्नी के लिये यात्रा की सुविधा के विषय में कुछ भी सूचना नहीं दी। अस्तु, लंगले इस विषय मे मौन रहा तो पैडले भी उस प्रसंग को क्यों कुरेदता।

लगभग तीन बरस तक लैंगले दम्पती न लखनऊ आये और न उनका कोई पत्र। पैडले ने भी बात न उठायी।

१९४० दिसम्बर की २० तारीख। पैडले नाश्ता ले रहा था। उस दिन पैडले का कार्यक्रम सुबह ही 'बक्शी का तालाब' की ओर मुआइने का था। साढे दस पर सेक्रेटेरियेट मे चीफ सेक्रेटरी से भेंट। दोपहर कचहरी मे कुछ पेशियां। नाश्ते के समय अदली ने एक तार पेश कर दिया। तार कलकत्ता से था—'२० दिसम्बर कराची मेल से पहुँच रही हूँ। असुविधा न हो तो सप्ताह दस दिन रहूँगी। मार्था।'

उन दिनो हावडा-कराची मेल लखनऊ ग्यारह बजे पहुँचती थी। पैडले ने पल भर सोचा और फोन पर पी० ए० को अपना दोपहर तक का कार्यक्रम बताकर आदेश दिया—कराची मेल के समय स्वयं गाडी लेकर स्टेशन जाये। मेहमानो के लिए सब आवश्यक सुविधा का ख्याल रखे। अदली और बैरे को भी समझा दिया, हम मेहमाना से लंच के समय मिलेंगे। निजी कारणो से सरकारी काम-काज मे अदल-बदल करने की पैडले की आदत न थी।

पैडले दोपहर सवा बजे लंच के लिये आया। मार्था यात्रा के बाद कपडे बदल कर कुछ विश्राम कर चुकी थी। भीतर के बरामदे मे लंच के सामने आराम कुर्सी पर दैनिक पत्र देख रही थी। लम्बी यात्रा और सफर की उनीदी रात की थकान चेहरे से पूर्णत मिट न पायी थी।

'स्वागत।' पैडले बरामदे मे कदम रखते ही उल्लास से बोला—लैंगले क्या भीतर है?' उत्तर की प्रतीक्षा बिना कह गया 'कलकत्ता के क्रिसमस और नववर्ष के जलसे छोडकर इस एकाकी को संगति की कृपा के लिये सौ-सौ धन्यवाद।'

'मार्था मुस्कराई नही, नजर बचाकर उत्तर दिया 'जान पड़ता है तार ध्यान से नही देखा । अकेली आयी हूँ । लगले स्केटिंग के लिये गुलमग गया है ।' जानते हो, मुझे जलसो की भीड और गुल से घबराहट होने लगती है । अजीब मानमिक उलझन मे थी । कुछ दिन एकात की शान्ति के लिए यही स्थान सूझा । मार्था नजरे बचाये थकी सी बोल रही थी ।

भोजन के समय मार्था पिता के यहा सिंगापुर और हागकाग से आये मेहमानो की चर्चा करती रही और कहा सध्या लौटोगे तो फुसत से बातें होगी ।

लच के बाद पैडले ने मार्था की सफर की थकान के विचार से उसे विश्राम की राय दी । स्वय बरामदे मे बैठकर एक सिगार समाप्त किया । कचहरी लौटने से पहले अदली को अन्य आवश्यक आदेश दे दिया ।

मार्था की नीद ठोक-ठाक की आहटो से टूटी । जाडे का दिन ढल रहा था । मार्था ने खिडकी से झाका । लॉन म एक बडी छोलदारी, जैसी बडे अफसरा के लिये दौरे के समय लगायी जाती है, चुस्त खडी हो चुकी थी ।

मार्था ने अनुमान किया—जरूर बहुत से मेहमान आ रहे है । दो-चार मेहमाना के लिये इतने बडे बगले मे स्थान की क्या कमी ? यहा भी वही भीड । किम-किम से क्या कहूँगी । बिना पूछे आ जाना ठीक न हुआ ।

बैरा मेहमान को उठ गयी देखकर चाय ला रहा था तब तक पैडले भी आ गया । 'विश्राम का कुछ अवसर मिला ? वह ममीप कुर्सी पर बैठ गया ।

मार्था ने पैडले को धन्यवाद देकर क्षमा भी मागी—'मिस्टर पेडले मालूम न था, आपके यहा इतने मेहमान आ रहे है। मैं यहा आने के बजाय दार्जिलिंग जा सकती थी।'

'कौन ? कैसे मेहमान ?' पैडले ने पूछा 'आप ही अकेली मेहमान हैं।'

'तो इतनी बडी छोलदारी किसके लिये ? मार्था ने विस्मय प्रकट किया।

'छोलदारी मेरे लिये' पैडले ने बताया 'मिसेज लैंगले इस बार आप अकेली हैं। मैं अकेला, बिना पत्नी के। ऐसी परिस्थितियो मे ये ही उचित समझा। जानती हो, सामान्यत दो नर-नारियो के एक मकान म होने पर कैसी बाते बनने लगती है और यह हिन्दुस्तान। यहा के अधिकाश लोग स्त्री-पुरुषो मे नर-मादा के सम्बन्ध के अतिरिक्त अन्य कल्पना ही नही कर सकते। नौकरो-चाकरो की नजरो या विचार मे आपके सम्मान के लिये ये ही उचित रहेगा।

मार्था की नजर लॉन की ओर थी। चाय भूनकर बोली—'दोपहर मे भी कहा था, आपने तार ध्यान से नही पढा। मैं अब मिसेज लैंगले नही हूँ। १७ दिसम्बर को तलाक ले लिया।'

मार्था की बात ने पैडले की कुछ धुधली-सी स्मृतियो को कुरेद दिया। सन् १९३६ मे लगले दम्पती बरेली मे उसके यहाँ आये थे तब दोनो के बीच की उपेक्षा और उदासी। अढाई बरस पहले वह लगले के निमत्रण पर अक्टूबर के अत मे दस दिन का अवकाश लेकर छोटे शिकार के लिये लगले के साथ कौमानी और बिसर गया था तब मार्था कलकत्ता गयी हुई थी। पत्नी के सम्बन्ध मे लैंगले की चुप्पी पैडले को खटकी थी।

'परिस्थितिया मजबूर कर देती है।' पैडले ने छत की ओर नजर किये जेब से सिगार केस खीचते हुए कहा।

मार्था ने रूमाल आखो पर रख लिया। सुबकिया वश करने के लिये ओठ दबा लिये। सिगार से कुछ कश लेकर पैडले, मार्था को सम्भलने का अवसर देने के लिये अदली को पुकारता बाहर दफ्तर की ओर चला गया।

पैडले बगले के दफ्तर मे आधे घटे तक कुछ कागज देख कर लौटा तो मार्था मुह हाथ धोकर और चाय पीकर सम्भल चुकी थी।

'कलकत्ता की अपेक्षा यहा अच्छी खासी सर्दी मालूम होती होगी ?' पैडले ने पूछा जैसे आधे घटे पूर्व का प्रसग उसे याद न हो। 'चाहो तो लखनऊ की सर्दी के अन्दाज के लिये गाडी मे कुछ दूर घूम आयें या छावनी के क्लब मे कुछ समय बैठ लेंगे। मार्था ने घूमने जाना स्वीकार किया। क्लब मे जाने की इच्छा न थी।

पैडले गाडी चला रहा था। मार्था उसके साथ की सीट पर थी। बिजली की रोशनी मे चमकती छावनी की सूनी सडको को पार कर पैडले अधेरी सडका पर गाडी के लैम्पो के तीव्र प्रकाश की सुरग मे तेजी से बढते हुए बोला—'दुख के अन्त के लिये क्या दुख। अधेरी रात के बाद फिर सूरज निकलता है। पाच बरस मे आपको कुछ तो जान ही सका हूँ। यह अजाने मे लगी ठोकर नही। देर तक सोच-गुन कर उठाया कदम है। पहली बार भूल से कीचड मे फस जाने पर आपने साहस से स्वय को उबारा था। एक बार और भूल या भाग्य से परास्त न हो जाने का साहस किया। इसके लिये सराहना करता हूँ।'

रात खाने के बाद मार्था को मालूम हुआ कि पैडले के लिये पलग

छोलदारी मे लगाया जा रहा है। उसने आपत्ति की आप अपना अभ्यस्त स्थान छोडकर दूसरी जगह क्यो सोयें। छोलदारी मेरे लिये रहेगी।'

'नही, यह कैसे हो सकता है' पेडले ने विरोध किया 'आज सर्दी अधिक है। मेरा मेहमान कष्ट मे रहे और मैं आराम मे। यह केसा शील ?'

'छोलदारी मेरे कारण लगी है' मार्था दृढता से बोली 'इसलिये वह मेरा स्थान और उस पर मेरा अधिकार है।' पैडले निरुत्तर रहा।

प्रतिष्ठा और सुरक्षा के विचार से जिला मेजिस्ट्रेट के बगले पर रात मे सगीन के पहरे का प्रबध रहता है। उस रात छोलदारी के कारण बगले पर सगीन पहरे का डबल प्रबध था। सगीन चढाये सिपाही रात भर बगले और छोलदारी की परिक्रमा करते रहे।

बडी अफसराना छोलदारी मे सभी सुविधाओ के लिये कनातो से कक्ष बना दिये गये थे। बिजली का तार पहुँचा कर सभी भागो मे और चौकसी के लिये छोलदारी के चारो ओर उचित प्रकाश का प्रबध। सर्दी के विचार से बिजली की अगीठी भी। गद्दे, रजाई, कम्बल, तकिये फश पर दरी कालीन आवश्यकता से कुछ अधिक ही थे। मार्था की अकस्मात आवश्यकता के विचार से एक आया भी छोलदारी मे मौजूद थी।

मार्था के मन-मस्तिष्क मे दीघ अवधि तक घुटते रहे क्षोभ और दुविधाओ की क्रान्ति का अवशेप और दिन मे विश्राम के बावजूद पिछली रात के सफर की थकान शिराओ मे अभी शेप थी। तिस पर छोलदारी मे रात बिताने की, असुविधाजनक न होने पर भी, अप्रत्याशित परिस्थिति। नीद के लिये सहायक अधेरे के लिये पलग के सिरहाने रखा टेबल लैम्प बुझा कर पलके मूद लेने पर आधी रात के बाद तक भी मार्था पूण जागृत और चेतन थी।

नियमित व्यवधान से भारी फौजी बूट पहने सिपाहियो के कदमो की आहटें, समीप आती और दूर हटती सुनाई दे जाती। पलके मुदी रहने के बावजूद, भारी कोट पहने, मुस्तैदी मे कधे पर रखी राइफल पर सगीनें चढाये, नये कदमो से चारो तरफ घूमते सिपाही दीख जाते। दिसम्बर अत की गहरी सर्दी मे बरसती ओस। ओस की बूदें सिपाहियो की सगीनो की नोको से और फिर सिपाहियो के कोटो पर बह कर धारिया बना रही हैं। मार्था की मुदी पलका मे उन सब सिपाहियो का चेहरा एक जैसा, पेडले का गम्भीर चेहरा। पेडले इतने सिपाहियो के रूप मे मार्था के आदर और सम्मान की रक्षा के लिये पहरा दे रहा है।

सिपाहिया के भारी फौजी कदमो की आहटें दूर हो जाती तो मार्था के कान सुनने लगते—जीवन भावुकता के परो पर नही, अनुभव के कदमो पर भूल से तुलना ही सही की पहचान लोक निन्दा से आतकित न होकर साहस से सत्याचरण के लिये आपका आदर-सम्मान आदर

मार्था का पहली रात छोलदारी मे सोना नित्य का क्रम बन गया। लखनऊ मे सुहावने मौसम, पार्को मे और बगले पर फूलो की गजाहट के कारण मार्था लखनऊ मे सप्ताह के बजाय बाईस दिन रह गयी। रात छोलदारी म लगे बिस्तर मे पहुँच आखें मूदे सुनने देखने लगती—अत दिसम्बर की रात मे बरसती ओस म पैडले के चौकस गम्भीर चेहरे मे, उसके आदर सम्मान की रक्षा के लिये ओस से भीगी सगीनो और वर्दियो मे चुस्त कदमो से पहरा देते सिपाहियो को। फिर कानो मे स्मृति से अधूरे-अधूरे शब्द भावुकता के परा पर नहीं, अनुभव के ठास कदमो पर भूल की तुलना से सही की पहचान

पन्द्रह दिन बाद उपरोक्त शब्दो मे मार्था का कुछ और शब्द सुनाई

देने लगे—दुख के अन्त के लिये क्या दुख ? दुख की रात के वाद फिर सूरज भून या भाग्य से परास्त न हो जाने के लिये सराहना । इन शव्दो के साथ मार्था को अपने कधे पर पडले की वाहो की पकड से सान्त्वना की वल्पना हो जाती ।

मार्था के चेहरे से मुदनी और उदासी दूर हाकर आखो मे उमग की चमक और गालो पर स्वास्थ्य वी रगत आ गयी । पैडले के चाकरो और निवट अधीन अफसरो को पडले के चूने से पुती दीवार की तरह अपरिवर्तनीय चेहरे और यत्रवत नियमित व्यवहार मे भावुकता की कुछ इन्द्रधनुषी झलको का आभास मिलने लगा । यहा तक वि मार्था की कलकत्ता के लिये विदाई के दिन साहव मार्था वो मेल पर चढाने के लिये वचहरी से एक वजे आ गया । मेल के पौने दो वजे छूटने पर विना लच लिये वचहरी लौट गया ।

फ्रासिसी वहावत है, पत्नी और अतेवासी सेवक से क्या छिपा सकता है ? पेडले के पी० ए० की नजरो मे गडने लगा, प्रत्येक मास की पहली-दूसरी और १५-१६ तारीखो पर साहव की निजी डाक मे, वलकत्ता या दार्जिलिग की डाक मोहर लगे लिफाफ आते थे । उन पर लिखे पते के हस्ताक्षर पहचाने हुए । पत्र के आने के दूसरे दिन पडले सुबह वगले से निकलते समय वलकत्ता या दार्जिलिग के पते पर पत्र दे जाता । पी० ए० को मालूम था, अप्रैल के आरम्भ मे ही पेडले ने अपने पाच मास के सचित अवकाश से १५ जुलाई से दो माम के अवकाश के लिये आवेदन दे दिया था । पी० ए० को यह भी मालूम था कि मई आरम्भ मे साहव ने अदालती विवाह का फार्म मगवाया था । अनुमान था, वह फार्म दार्जिलिग के पते पर लिफाफे मे गया था ।

जून आरम्भ मे पैडले के लिये दार्जिलिंग से पत्र कुछ विलम्ब से आया। लिफाफा भी वजनी, जैसा मई मे उस ओर गया था। पत्र था—

'प्रियतम पैडले,

मुझसे विवाह के लिये तुम्हारा आवेदन मेरे लिये आजीवन अमित आभार का मूत है परन्तु मैं उसे अपने आवेदन के साथ कचहरी मे पेश न करके तुम्हे लौटा रही हूं। मेरे प्रति तुम्हारे सद्भाव की यह अभिव्यक्ति मेरे जीवन का सबसे बडा सन्तोप और गर्व है। इसे लौटाते लग रहा है कि अपने हाथा अपना हृदय चीर रही हूँ। तुम्हे शारीरिक रूप से न पाकर भी तुम्हारे वचन का यह प्रतीक मेरे जीवन का अवलम्ब बन सकता हे। मैं अभागी हूँ परन्तु तुम्हे वचनवद्ध रखने की कृतघ्नता न करूंगी। तुम्हे कभी भी देख पाने का अवसर मेरा सबमे बडा मौभाग्य होगा।

तुम्हे अनुमान नही, मेरे लिये तुम कितना वडा त्याग कर रहे हो। तुम्हे धोखे मे रखने के बजाय मुझे अपने प्राण देकर अधिक सन्तोप होगा। सक्षेप मे, पिता दस दिन पूर्व ही देहली मे पाच दिन रहकर लौटे है। उनके सम्पर्को का अन्दाज तुम्हे है। वतमान नाजुक परिस्थितिया के विचार से शीघ्र ही महत्त्वपूण परिवतनो की योजनाए है। तुम्हे भारत के विशिष्ट योग्य अफसरो मे चुना गया है। तुम्ह शीघ्र ही मेरठ या पश्चिमोत्तर की ओर कमिश्नर का दायित्व सम्भालना होगा। तुम्हारे लिये बहुत वडा द्वार खुल रहा है। इस आयु मे कमिश्नर का पद पा लेने पर कई योग्य आई० सी० एस० ओडवायर, हेली, लैम्वट, हालेट, जैन्किन्स गवनरो के पद पा चुके हैं। प्रियतम पेडले मैं तुम्हारे माग की बाधा न बनूगी।

ब्रिटेन की रुढिवादी मानसिकता के उदाहरण रूप एडवड अष्टम का उदाहरण तो अमिट रहेगा ही। सम्राट तलाक पायी स्त्री को अपना लेने के कारण सिंहासन का अधिकार खो वेठा। यह भी याद होगा कि केम्ब्रिज के लाड रेक्टर का सम्मान पाये लार्ड बटलर बहुमत से प्रधान मत्री पद के अधिकारी थे। सम्राट जार्ज पष्ठ ने उन्हे डिपुटी प्राइम मिनिस्टर तो स्वीकार किया परन्तु प्राइम मिनिस्टर का पद केवल इसलिये देना अस्वीकारा कि वे तलाक ले चुके थे। प्रिय पेडले, रुढि से मुदी आखो को तक नही खोल सकता। तलाक पायी स्त्री से विवाह तुम्हारे माग मे किसी प्रकार की रुकावट बन जाये, इस सम्भावना की अपेक्षा मुझे तुरन्त मृत्यु स्वीकार। मुझे मित्र की भाति याद रख सको तो अहोभाग्य। इम अवस्था मे विवाह के लिये अपना आवेदन कचहरी मे कैसे दे सकती हूँ? तुम्हारा आवेदन तुम्हे लौटा रही हूँ। प्यार, प्यार, आजीवन प्यार। मार्था।'

रात मे जिला मेजिस्ट्रेट के बगले पर पहरा देते सिपाहियो ने देखा, पेडले गरमी के कारण वरामदे मे पखे के नीचे वेठा सिगार पीता रहा। सिगार समाप्त कर कुछ देर लॉन मे टहलता रहा। फिर सिगार लगा कर पखे के नीचे सोचने बैठ गया। चार बजे वह टेबल लेम्प उजागर कर पत्र लिखने लगा—

प्रियतम मार्था,

तुम्हारा खरीता मिला। आधा जीवन लाघ कर रोमान्स के खटोले पर भावुकता के बादलो मे उडने की कल्पना नही कर रहा हूँ। कमिश्नर के बाद गवनर का पद कल्पनातीत नही। परन्तु अन्तत व्यक्ति को किसी भी पद, वायसराय के पद से भी, अवकाश लेना ही होगा। उच्चतम पद भी जीवन के श्रम का विश्राम नहीं हो सकेगा। उच्चतम पद भी एक

आसन ही या अवस्था का खोल ही होगा, मतोप नही ।

आधा जीवन लाघ कर मैं चाकरी की अन्तिम मजिल के बाद विश्राम और सन्तोष के सहारे की कल्पना कर रहा हूँ। वह सहारा विश्वस्त सहयोगी के बिना अकल्पनीय । मेरे लिये वह तुम हो । तुमने स्वय सकेत किया है—ससार के सबसे बडे सम्राट के पद से भी काम्य एक सतोष है । मुझसे उस सन्तोष का अवसर न छीनो ।

विवाह के लिये आवेदन फिर भेज रहा हूँ। अपना और तुम्हारा अदालती विवाह का पत्र अदालत मे पेश कर दिये जाने की सूचना की प्रतीक्षा दो सप्ताह तक करूगा। सूचना तार से दे सको तो बेहतर। भविष्य तुम पर निभर करेगा । यदि पदोन्नति की सूचना तुमसे परिणय सूत्र मे बध सकने से पूर्व आयेगी तो उस पर विचार के लिये जुलाई के अत तक समय के लिये प्राथना करूगा । तुमसे परिणय सूत्र मे बध सकने म असफल होने पर पदोन्नति को उस उत्तरदायित्व के लिये अक्षमता के कारण अस्वीकार कर दूगा। उस स्थिति म इस नौकरी को भी अवधि तक निबाहने म क्या साथकता रह जायेगी ? बाद की बात बाद म । उत्कट प्रतीक्षा मे—

तुम्हारा अभिन्न
पैडले ।

× × ×

पाठको के समाधान के लिये, पडले का कमिश्नर के पद पर उन्नति अस्वीकार करने की नौबत नहीं आयी ।

अपना-अपना एतकाद है

मौलाना को पडोसी ड्राइवर जमील अहमद का बहुत ख्याल रहता। वे नसीहत करते रहते—बरखुरदार, शायर ने कहा है—

> जफर उसे न जानिये बशर,
> जिसे ऐश मे याद खुदा न रहा,
> तैश मे खौफे खुदा न रहा।

जमील नेक है और नमाजी। वह ऐश, सुख और सुविधा मे खुदा को न भूलता। हर मौके पर कहता रहता—इशा अल्लाह, शुक्रे खुदा लेकिन स्वाभिमान के सवाल पर असहिष्णु। तैश काबू नही कर पाता। बाद मे पश्चाताप भी अनुभव करता।

चौराहे पर उसकी गलती थी या नही, सिपाही ने धमकाया और गाली दे दी। जमील ने गाडी को ब्रेक लगाया और लपक कर सिपाही के दायें-बायें जबडो पर दो घूसे जड दिये।

चालान खामुखा हो जाये तो भी दस-पन्द्रह रुपये जुरमाने की बात, परन्तु फर्ज अदा करते सरकारी प्रतिनिधि से फौजदारी सगीन जुर्म है। जमील ने अदालत मे भी झूठ नही बोला। साल भर की ठुक गयी।

जमील की गैरहाजरी मे मौलाना पडोसी के बाल-बच्चो का हाल-चाल और जरूरत पूछते रहे।

नेकचलनी मे डेढ मास रिमीशन पाकर जमील जेल से लौटा तो पहले मौलाना को सलाम अर्ज करने और उनकी मेहरबानी के लिए धन्यवाद देने गया।

पडोसी मौलाना हमदर्दी मे बोले, 'शुक्र खुदा का, सही-सलामत लौट आये। तकलीफ तो जरूर हुई होगी ?'

जमील ने गहरी सास ली—'मौलाना जेल काटने की शर्मिंदगी जरूर है, लेकिन आपकी दुआ और परवरदिगार के करम से तकलीफ खास नही हुई। कैदी जमादार बहुत नेक और खुदा तरस रहा।' वह मौलाना को कैदी जमादार पदमलाल पर बीती बहुत देर तक बताता रहा।

जमील ने बताया—'सजा हो जाने पर भी चोरी, डकैती, कतल के कुछ ही अपराधी अपना जुर्म कबूल करते है। सब अपनी सजा का कारण बताते है, दुश्मनो की साजिश और पुलिस की बेईमानी, लेकिन पदमलाल ने कुछ नही छिपाया। पदमलाल की उम्र रही होगी तीस-बत्तीस की, परन्तु प्रौढा जेसी सजीदगी और सब्र।'

पदमलाल बोला—भाई, सजा तो काट चुके। आठ-दस महीना और समझो वह भी कट जायेंगे। पुलिस अदालत ने जो माना हमारे साच्छी भगवान् हैं। हमारे खिलाफ गवाह बन गये हमारे ताऊ के बेटे-भाई-भौजाई। अपनी घर वाली को मारने-पीटने की तो बात क्या, हमने उसे गाली-गुफ्ता भी किया हो तो हमे अगली सास न आये। बेचारी बीमार रहती थी, तब उसे बनाकर खिलाते, उसका मैला तक साफ करते। बीमारी मे मजबूर थी, पर थी बहुत भली। हा, पिछले जन्म मे जरूर उसे

सताया होगा, उसके भी कुछ करम रहे होंगे, जो हमारे उसके करमों का फल देने को ही भगवान् ने उसे भेजा था।

पदमलाल के बाप-ताऊ मे घर-कारोबार का बटवारा नही हुआ था। एक मकान किराये पर भी उठा हुआ था। पहले उनकी एक ही दुकान थी, फिर दो दुकानें हो गयी थी, पर साझी। ताऊ के दो जवान बेटे थे। एक अपने पिता के साथ दुकान पर बैठता, दूसरा चाचा के साथ। पदम की दो बडी बहनो के व्याह हो चुके थे। पदम दसवी मे पढ रहा था। सत्रह की आयु। तभी एक दुघटना मे उसके पिता और ताऊ एक साथ जाते रहे। अलग से वह लम्बी बात है। आदमी जानता नही, पर सब होता है अपनी करनी से ही। पदम ने कहा।

पदम के ताऊ और बाप तो राम-लखन थे। दोनो के मरते ही पदम और उसका मा पर मुसीबतो के पहाड टूट पडे। पदम ने दसवी पास कर ली तो मा चाहती थी कि बाप वाली दुकान पर पदम बैठे और जगह-मकान का भी पच बटवारा हो जाये। पदम की सगाई दो वर्ष पहले हो चुकी थी। उसके भावी ससुर भी यही चाहते थे। सब कुछ उसके भाइयो के हाथ मे ही था। वे बटवारा क्या चाहे ? कहने को घर दुकान साझा रहा, पर भीतर दो चूल्हे। पदम और उसकी मा को न पेट भर अन्न, न तन ढकने को लत्ता। रहने को बस काने की कोठरी और रसोई भर की जगह।

ससुर बडे डाकखाने मे बाबू है। उन्होने मदद की। जमाई को छोटे डाकखाने मे नौकरी दिला दी कि किसी तरह अपनी बेटी को विदा कर सके। बेटी सत्रह की हो गयी थी। अब दूसरा रिश्ता क्या सोचते। पदम के बाप मरे तो मुसीबतो की मारी मा भी खटिया से लग गयी। गौने मे

बहू आयी, वह पहले से बीमार। कुछ अन्दरूनी तक्लीफ थी, पर उसने सास की सेवा मे कसर नही की। मा पदम के व्याह के साल भर बाद जाती रही।

पदम की घरवाली के हमल ठहर गया तो उसकी तकलीफ ऐसी बढी कि दर्दों से चीखे-छटपटाये, बेहोश हो जाये। खाट से उठ न सके। उमसे जितना हो सकता सम्भालता, पर मद क्या जाने कि ऐसे मे औरत को क्या दिया जाता है। भौजाइया और ताई काढा, फाकी देती रहती या पेट-पीठ मलती-दलती रहती। हालत बिगडती गयी। एक दिन बुखार से दिन भर बेहोश। पालकी मे उठवा अस्पताल ले गया। हमल मर गया था। आपरेशन हुआ। खेर बहू किसी तरह बची, पर डाक्टरनी ने कह दिया। अब बच्चा नही हो सकेगा।

अब पदम की ताई, भौजाइया बहू को हरदम ताने-मैने देती रहती हैं। कहती—कुलच्छनी है। लडके की इससे सगाई हुई तो घर के मालिक जाते रहे। सास को खा गयी। अपना पेट भी खा गयी। गम मे बहू की तक्लीफ और बढ गयी। दरद मे चीखे, छटपटाये, कभी खाट से गिर पडे और चोट खा जाये। पडोसी उमकी चीख, कराहट सुने तो हाल पूछें, चोटो से आयी सूजन देखे। पदम के भाई-भौजाई पडोसिया से बताय—पदम बडा जालिम है। बीमार बहू को पीटता है। चाहता है, यह मर जाये तो और व्याह कर ले। पदम के ससुर के भी कान भर आवें। उसने कई बार सोचा, कही दूसरी जगह जा रह, पर कसे होता? बासठ रुपल्ली तनख्वाह मे क्या-क्या हो। घरवाली की दवा जरूरी और तक्लीफ मे उसे दूध के सिवा कुछ पचता न था। बहू खुद उससे कहती—दूसरा व्याह कर लो, वह घर समालेगी। उसे भी सभालेगी।

उस दिन पदम डाकखाने से लौटा तो वहू के पेट मे हल्का-हल्का दर्द उठ रहा था। जब तक वह कपडे बदले, दद से चीख कर चौके मे ही गिर पडी। दवाई खतम थी। कभी आठ-दस दिन दद नही भी उठता था। महीने सत्ताईस तारीख थी। जेब मे एक रुपया भी न था। ऐमे समय किसी से दो-चार ले आता और पहली को लौटा देता, पर बहू को ऐसी हालत मे छोडकर कैसे जाता। वहू को कुछ चैन आया, तब पदम ने चावल उबाल कर नमक से खाया। बाजार से उसके लिए पाव भर दूध ले आया।

वहू का मन अभी दूध पीने को न था। दूध का सकोरा खाट के सिर-हाने ताक मे रख दिया। बहू की आख मे चौध न लगे, इसलिए दीवार-गिरी लेम्प धीमा करके वही रख दिया ताकि वह लौटे तो दरवाजा खोलने के लिए उसे उठना न पडे। बहू से घटे डेढ घटे मे दवा लेकर लौटने की वात कह कर वह वाजार चला गया। इस ख्याल से कोठरी के किवाडो पर वाहर से साकल चढा दी। जिससे रुपया लेने गया था, मिला नही। उधर ही घूम-घामकर फिर उसके यहा पुकारा। वह आदमी तब भी नही लौटा तो पदम लाचार खाली लौट आया।

पदम ने गली मे कदम रखते ही रोना-धोना सुना। मकान मे ताई और भावजे दहाड-दहाड कर रो रही थी—हाय रे, हत्यारे ने वेचारी को मार डाला। पदम कुछ समझ न सका। हुआ यह कि पदम के गये थोडी देर बाद घर मे लोगो को धुए, तेल और कपडे जलने की गध मालूम हुई। पदम की कोठरी से धुआ निकलता देख बडी भौजाई ने साकल खोल-कर भीतर झाका और चीखी—आग-आग! धुए मे दिखायी क्या देता! खाट और अनगनी के कपडो से लपटे उठ रही थी। वे लोग गागरें और बाल्टिया भर-भर कोठरी और खाट पर डालने लगे। आग बुझी तो वहू

के कपडे जले हुए और खतम। भौजाइया चीख-चीख कर रोये जायें—हत्यारे ने गरीब को जला कर मार दिया। पदम सिर पकडे बेठा रहा। किसी को क्या कहता!

पदम से हमदर्दी थी सिफ पडोसी मास्टर साहब को। उन्होंने पूछा तो पदम ने बताया—वहू को कैसे छोड और साकल लगाकर गया था। मास्टर ने जगह देखी। पूछा तुम्हारे यहा बिल्ली-विल्ली तो नही आती? बिल्ली तो आती ही थी। मास्टर ने फश पर दिखाया, देखो दूध सने सकोरे के टुक्डे खाट के पास पडे है। दीवारगिरी लैम्प भी पडा है। वहू को झपकी आ गयी होगी। विल्ली दूध पर कूदी होगी, जिससे लैम्प गिर गया और कोठरी मे आग लग गयी। किरामन का जहरी धुआ भर जाने से वह दम घुटकर बेहोशी मे जल गयी होगी।

दिन चढने से पहले तो मसान जाने का कुछ प्रवध हो नही सकता था। मास्टर पदम के पास बैठे ढाढस वधाते रहे। दिन चढने से पहले चौकी से दारोगा और सिपाही बुला लाये। मौका देखा। बयान लिया। फिर उसके भाइयो और भौजाइयो के बयान बहुत देर तक अलग से लेते रहे। मास्टर की किसी ने न सुनी।

दारोगा ने हुक्म दिया, लाश जाच के लिए अस्पताल जायेगी और पदम को हथकडी लगा चौकी पर ले गये।

पुलिस ने पदम का चालान दफा ५०६ मे कर दिया। पुलिस के गवाह थे उसके भाई-भौजाई और उनके किरायेदार, उन्ही की दूकान पर नौकर। उन लोगो ने बयान दिये—वहू बीमार रहती थी। बोलचाल की अच्छी नही थी, तिस पर आपरेशन से बाझ भी हो गयी। पदम परेशान ता रहता होगा। गुस्से मे बहू का रोना-चीखना सुनते थे। उसके वदन पर चोटो के

दाग भी देखते थे । पदम पीटता तो रो-रो कर कहती—इससे तो अच्छा यह कसाई हमारा गला काट दे, कोई वहू हमे जहर ला दे । पदम बहू को मार-पीट कर रोती-कराहती को छोड कोठरी की साकल लगाकर चला गया था । भाइयो-भौजाइयो ने गवाही देते-देते आसू भी ढरका दिये ।

पुलिस ने पदम पर जुम लगाया कि पदम की मशा थी बीमार बहू मर जाये । बहू ने उसके जुल्म से मजबूर होकर जल कर आत्महत्या कर ली ।

पदम के पास सफाई वकील के लिए दमडी न थी । ससुर ने समझा उनकी लडकी नही रहती तो उनका रिश्ता खत्म । अदालत ने दस साल की सजा सुना दी ।

जमील को सब किस्सा बताकर पदम ने गहरी सास ली—अदालत ने फासी का हुक्म नही दिया, पर हम क्या जिन्दा हैं, बस सास चल रही है । चल-फिर भी रहे है, पर यह जीना है ? किसके लिए जियेंगे ? किसे मुह दिखायेंगे ? हमारे लिए तो दुनिया से यह जेल भली । अदालत फासी दे देती तो क्या बुरा था । सब दुख खतम हो जाता । फासी का हुक्म होता कैसे ? उस जनम की करनी जो अभी और भोगनी थी । जो बोया है वही तो काटेंगे ।

'मौलाना, पदम जैसा आदमी !' जमील का स्वर कातर हो गया—'कुछ अगल-पिछला भी होता ही होगा !'

मौलाना के माथे पर तेवर पड गये—'उनके लिए उनका वहम सही है । हमारे लिए खुदा की रजा और उसका हुक्म ! अपना-अपना एतकाद है !'

●

लैम्प शेड

'जर्मन सेना दो सौ वेश्याए लिए शीघ्र तैयार रहे। इनका चालान पूर्वी मोर्चे की ओर जाने वाले काफिले के साथ होगा।' मेजर हास को शिविर के चीफ कमाण्डर का 'तुरन्त आदेश' मिला। हास बोखनवाल्ड जेल शिविर के जनाना विभाग का कमाण्डर था।

बात दूसरे विश्व महायुद्ध के आरम्भिक दिनो, अप्रैल १६४१ की है। नाज़िया अथवा जर्मनी द्वारा अधिकृत सभी युरापीय देशो को पूणत आर्य नस्ल का ससार बना देने के लिए उन देशो मे खोज-खोज कर यहूदियो का समूल नाश किया जा रहा था। कई लाख यहूदी नर-नारी ओशविक बोखनवाल्ड आदि बीसियो जेल शिविरो मे मृत्यु के समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। श्रम मे समर्थ यहूदी स्त्री-पुरुषो से युद्ध सामग्री उत्पादन के लिए अधिक से अधिक और कडी मेहनत ली जाती। भोजन केवल प्राण बने रहने योग्य। यहूदी सामर्थ्य से अधिक श्रम और कम आहार से जजर या रोगी होकर श्रम योग्य न रहते तो उन्हे सैकडो-हजारो की सख्या मे अन्तिम केन्द्रो (लिक्विडेशन सेन्टरो) मे भेज दिया जाता। अन्तिम केन्द्रो मे बडी-बडी बारके थी जिनके दरवाजे-खिडकियाँ मूद दी जाने पर भीतर-बाहर की वायु बाहर-भीतर न जा सकती थी।

सैकडो की सख्या मे यहूदियो को इन बैरको मे बन्द करके प्राणान्तक गैस बैरको मे भर दी जाती । यहूदी बच्चो को, सपोलो की तरह भविष्य के लिए खतरनाक मानकर तुरन्त समाप्त कर दिया जाता ।

नाजी दर्शन और नाज़ी आधिपत्य के समय भी ऐसे अनेक जर्मन नागरिक थे जिनके लिए मानवी दृष्टि से कातर, निहत्थे यहूदी स्त्री-पुरुषो बच्चो का निर्मम सहार असह्य था । नाज़ी नीति का प्रकट विरोध राष्ट्रद्रोह और आर्यवश से विश्वासघात समझा जाता । ऐसे करुणार्द्र हृदय अवसर होने पर परिचित यहूदियो की प्राणरक्षा के लिए उन्हे नाज़ी आधिपत्य-सीमाओ से भाग जाने मे गुप्त सहायता देते रहते । कुछ यहूदी बच्चो को विश्वस्त सुरक्षित परिवारो मे छिपा देने की जोखिम तक सिर ले लेते । यहूदी सहार विरोध के अपराध मे उम्र कैद या मृत्यु दण्ड तक हो सकता था ।

यहूदी नवयुवती जेन का परिवार असन्न निश्चित सहार से रक्षा के लिये बन नगर से गुप्तरूप से इगलैंड भाग गया था । परिवार के बर्न से निकलते समय जेन परिवार के साथ से फिसलकर बन मे रह गयी । जेन ने दो यहूदी बच्चो को समीप के ग्रामो मे विश्वस्त मित्र जर्मन परिवारो मे छिपाया हुआ था उसका निश्चय था कि दोनो बच्चो को सकट से निकाले बिना आत्म-रक्षा के लिए नही भागेगी । बन से सुरक्षित हालैंड निकल जाने के उपाय उसके पास तैयार थे । उसे भरोसा भी था कि उसके आर्य नस्ल से मिलते-जुलते वर्ण, आखो और केशो के रग से उसे सहसा यहूदी नही समझ लिया जा सकेगा ।

जेन के पिता-माता और दोनो छोटे भाइयो को बन से भागे पाच ही दिन बीते थे । जेन यहूदी वश रक्षा के लिए अनिवार्य काम से लुकती-

छिपती नगर के एक दूर मुहल्ले मे गयी थी। सध्या लौटते समय माग मे उसकी दो पुरानी सहपाठिनें अक्स्मात सामने आ गयी। दोनो ही कट्टर नाजी और घोर यहूदी विरोधी थीं। जेन ने उन युवतियो से नजरे बचा लेनी चाही परन्तु वे दोनो उसके पीछे हो ली। कुछ दूर जाने पर नाजी पुलिस के सिपाही मिल गये। जेन की सहपाठिनो ने छिपी हुई देश की शत्रु यहूदिन का भेद पुलिस को देकर आर्य नाजी का मत्तव्य पूरा कर दिया।

जेन की गिरफ्तारी के बाद उसके विपय मे जाच-पडताल से जेन के परिवार के लापता हो जाने के प्रमाण से जेन की वास्तविकता के सम्वध मे सन्देह न रहा। जेन के केश घने लम्बे थे। वदल-बदल कर जूडे बनाती थी। वन की जेल मे जाते ही उसके केश गदन तक छाट दिये गये। कारण कुछ यहूदी युवतिया गिरफ्तार हो जाने पर असह्य अपमानो और यातनाओ से बचने के लिए अपने लम्बे केशा से ही गले मे फन्दे लगाकर आत्महत्या कर चुकी थी। चार दिन मे छिपे हुए कुछ और यहूदी पकड मे आ गये। उन्हे पहले लिपजिग के समीप छोटे कैदी शिविर मे भेजा गया। वहा से उन्हे यहूदी कैदियो के काफिले के साथ बोखनवाल्ड शिविर के लिए रवाना कर दिया गया।

नाजी सैनिक युरोप के अधिकृत देशो मे मनचाही लूट और स्थानीय स्त्रियो से वलात्कार श्रेष्ठ आय जाति का प्राकृतिक अधिकार समझते थे। परिणाम मे, नाजी सेनाओ मे आतशिक, सूजाक और दूसरे सक्रामक रोग भयानक परिणाम से फैलने लगे। इस सम्बन्ध मे कडे अनुशासन लागू करने से नाजी सिपाहियो मे निरुत्साह और उनकी बवर वीरता मे शैथिल्य की आशका थी। सेनाओ के स्वास्थ्य के लिए उपाय किया

गया कि सैनिको की वासना तृप्ति के लिए यहूदी कैदी शिविरो से पर्याप्त मात्रा मे स्वस्थ निरोग युवतियो को चुनकर अग्रगामी छावनिया मे भेजते रहना। ऐसे चुनावो और चालान मे यहूदी लडकिया—स्त्रियो की इच्छा का कोई विचार न होता।

जिस दिन मेजर हास को पूर्वी मोर्चो पर नाज़ी सेवाओ के लिए दो सौ युवतियाँ चुनकर तैयार रखने के लिए आदेश मिला, जेन तीन दिन पूर्व बोखनवाल्ड शिविर के जनाना अहाते मे पहुँच चुकी थी। अभी उसका स्वास्थ्य गिरा नही था। शरीर भी सुडौल। अहाते के सार्जेन्टो की नजर उस पर वैसे न अटकती। सैनिको के स्वास्थ्य की चिन्ता से यहूदी स्त्रियो को अग्रिम छावनियो मे भेजने से पूर्व उनके पूरे शरीर की जाच कर ली जाती थी।

यहूदी स्त्रियो को नाजी सैनिको के उपयोग के लिए अग्रिम छावनियो मे भेज देना सर्वथा निरापद न था। इस तरह भेजी गयी अनेक स्त्रिया जान पर जोखिम लेकर भी भाग चुकी थी या भागने का यत्न करती थी। नाज़ी शासको और सैनिक अधिकारियो ने इस आशका का उपाय कर लिया था। इस प्रयोजन से चुनी गयी स्त्रिया का चालान, मोर्चा छावनियो की ओर करने से उनकी बाई कोहनी से कलाई तक गुदना कर दिया जाता—'वेश्या—जर्मन सेना के लिए।'

बहुत-सी यहूदी स्त्रिया अपनी बाह पर ऐसा कलक गुदवाने के विरोध मे यथाशक्ति आमरण सघर्ष करती। उन्हे गोली मार देने से प्रयोजन पूरा न हो सकता। शिवरो के डाक्टरो ने ऐसे विरोध का भी उपाय कर लिया। चुनी हुई युवतिया की शारीरिक परीक्षा के बाद उन्हे हल्की बेहोशी के लिए सुई लगा कर मेजो पर जकड दिया जाता। बेटरी से

चलने वाली गुदना सुई से उनकी वाह पर पहचान गोद दी जाती। शरीर पर गुदना उस स्थान की खाल जला दिए जाने या छीले विना मिट नही सकता। किसी युवती की जख्मी वाह या बाह पर ऐसे चिह्न ही उसके भगडी वेश्या होने की पहचान हो जाती।

शिविर के जनाना अहाते से चुनी गयी दो सौ युवतियो मे जेन भी थी। उसके विरोध के बावजूद जो सबके साथ हुआ, उसके साथ भी हुआ। सुध आने पर उसने अपनी बाह पर गुदी पहचान देखी और पत्थर की मूर्ति की तरह सुन्न हो गयी।

दूसरे दिन प्रात शिविर दफ्तर मे पहुँचते ही मेजर हास ने जनाना अहाते की गत रात की रिपोर्ट मे पहली सूचना देखी। रात मे वारक नम्बर सोलह मे वेश्या कार्य के लिए चुनी गयी दो युवतिया ने आत्महत्या कर ली थी।

शिविर मे एक दिन रात मे सौ-डेढ सौ यहूदियो का मर जाना चिन्ता का कारण न होता बल्कि उससे कुछ राशन की बचत, नये आने वाले कैदिया के लिए स्थान की सुविधा हो जाती। बोखनवाल्ड शिविर के लाख से अधिक यहूदियो मे से निरन्तर क्षुधा की जीणता और रोग से, एक दिन-रात मे, कभी इससे भी अधिक कैदी दम तोड देते। यो भी अनुशासन रक्षा के लिए सप्ताह मे एक दो वार आठ-दस यहूदिया को भागने के यत्न, किसी नियम भग या अवज्ञा के अपराध मे गोली मार दी जाती और उन्हे शव भस्मक विजली भट्ठी (क्रीमेशन फर्नेस) के अहाते मे ढकेल दिया जाता।

शिविर मे कैदी को दण्ड मे मार दिया जाना या उसका रोग से मर जाना साधारण वात थी, आत्महत्या गम्भीर बात। आत्महत्या का अर्थ

हुआ, कैदी की स्वेच्छा से मृत्यु। यह चिन्ता का कारण था कि कैदी को स्वेच्छा से मर जाने का साधन और अवसर कैसे मिले। ऐसी स्थिति चौकसी मे शैथिल्य का सकेत थी। जेन और ब्लूम की आत्महत्या के तरीके का पता लगाने मे कठिनाई न हुई। दोनो के कपडे और शरीर कलाइयो से खून बहकर लयपथ थे। खून निकल जाने से शरीर पुराने मैले कागज की तरह सफेद। कलाई पर नसें किस औजार से काटी गयी उस चर्चा से विषयान्तर हो जायगा।

शवभस्मक भट्ठी विभाग का सुपरिन्टेन्डेन्ट कैप्टन डाक्टर राजर था शवो को भट्ठी मे ले जाने वाली पट्टियो की जजीरो पर डलवाने से पूर्व वह शवो पर से कपडे उतरवा लेते। कपडे दूसरे कैदियो को उपयोग के लिए दिये जा सकते थे या झाड-पोछ के लिए काम आ सकते थे। अधिक महत्त्वपूण काम था, शवो के मुख खोलकर उनके जबडो की परीक्षा। यहूदी कैदियो के प्लाटिनम, सोने-चादी के अगूठी या जेवर तो उतरवा ही लिए जाते थे परन्तु बहुत से यहूदियो के खोल पडे दातो मे प्लाटिनम, सोना या चादी भरे होते। कुछ लोग दात टूट जाने पर कीमती धातु के नकली दात लगवा लेते थे। कैप्टन राजर ऐसा मूल्यवान धातु राष्ट्रीय कोष के लिए या अपने मेहनताने मे निकलवा लेता।

कैप्टन राजर को दस्तकारी मे भो रुचि थी। उसने आशविक और अय शिविरो मे यहूदियो के शवो की त्वचा से लैम्प शेड या उपहार योग्य अन्य वस्तुएँ बनाये जाने की चर्चा सुनी थी। शुद्ध आय नस्ल के गौरव के लिए पशुओ की तरह यहूदियो की त्वचा के उपयोग से अधिक सन्तोष की वस्तु क्या हो सकती थी। नाजी अफसरो मे ऐसी दुलभ वस्तुआ के लिए शौक चल गया था। राजर भी अच्छी स्वस्थ अवस्था

मे मरे शवो की त्वचा उतरवाकर और कमाकर लेम्प शेड और तम्बाकू के बटुए बनाने लगा। राजर कभी इन कला कृतिया को बडे अफसरो की कृपा की आशा मे उपहार भेंट कर देता, कभी उन्हे बेच लेता।

जेन और क्नूम दोनो ही नवयुवतिया थी। ढाई तीन सप्ताह पूर्व ही पकडी गयी थी। आहार की कमी और कठोर शारीरिक श्रम से अभी उनकी त्वचाए विरूप न हा गयी थीं। चिकनी और श्वेत त्वचाए राजर ने दोनो शवो की उतरवा ली। उनकी त्वचा से अच्छा बडा लैम्प शेड बनाते समय उसे एक और ख्याल आया। दोनो की बाहा से 'वेश्या—जर्मन सेना के लिए' की पट्टिया काट कर लैम्प शेड की झालर मे लगा दीं। वह शेड राजर ने मेजर हास को भेट कर दिया। दुलभ भेंट पाकर हास के मन मे विचार कौंध गया।

मेजर हास की वाग्दत्ता प्रेयसी लुडमिला को भी आर्य रक्त की सर्वश्रेष्ठता मे निष्ठा और यहूदियो से घोर घृणा थी। लुडमिला हैमबग मे थी। यदि यहूदी उन्मूलन अभियान मे हास की बदली बार-बार हैमबग से दूर स्थाना मे न होती रहती तो दोना का विवाह डेढ बरस पूर्व ही हो जाता। आर्य जाति के सामर्थ्य और यहूदियो से घृणा के मूत, आर्य रक्त की ज्याति के प्रतीक उस लैम्प शेड से बेहतर उपहार हास की प्रेयसी के लिए क्या हो सकता था ? मेजर हास के अधीन सार्जेन्ट गाफ भी हैमबग के समीप गाव का था। गाफ दो सप्ताह के अवसर पर गाव जा रहा था। हास ने वह लम्प शेड एक बक्स मे रखवा कर गाफ के हाथ लुडमिला के लिए भेज दिया।

लुडमिला ने यहूदी शिविर जेलो मे यहूदी त्वचा के इस प्रकार की चर्चा सुनी थी। लेम्प शेड देखते ही उसे वह बातें याद आ गयी और

आर्य रक्त और जर्मन राष्ट्र की शत्रु यहूदी नस्ल के प्रति विरक्ति की हल्की सी मुस्कान। लुडमिला ने बैठक की मेज के लैम्प से पहला शेड उतारकर उपहार का शेड लगा दिया। उतरते दोपहर मे ही खिडकियो पर भारी परदे खीचकर अधेरा कर लिया और मेज का लेम्प जला दिया।

लुडमिला शेड को देखकर हास की याद मे मुस्करा रही थी। उस की नजर पडी शेड की झालर पर। भीतर रोशनी के कारण त्वचा पर गुदी हुई पक्तिया स्पष्ट पढी जा रही थी। 'वेश्या—जमन सेना के लिए।'

लुडमिना के मस्तिष्क पर भयकर चोट—मैं क्या जर्मन सेना के लिए वेश्या हूँ? दीघ निश्वास से दूसरा अनुमान, शेड के लिए मानव त्वचा कहा से, कैसी ली गयी होगी? बलात वेश्या बनायी जाने के विरोध मे मरी नारी की त्वचा। उसका चेहरा आन्तक और घृणा से सुन्न, सफेद हो गया। क्षण मे आखे क्रोध की उत्तेजना से लाल। शरीर पर रोमाच। दोना हाथो से मेज पर सहारा लिया। हाथो पर माथा टिका दिया। मन वश न हुआ तो उठकर कमरे मे चक्कर लगाने लगी। मन का उबाल बढता जा रहा था। उजले लेम्प शेड की ओर नजर जाने पर कलेजे मे बर्छी सी धस जाती उसने मेज का लेम्प बुझा दिया। कभी मेज से दूर कुर्सी या सोफा पर बेठती, कभी पिजरे मे बन्द जानवर की तरह कमरे मे चक्कर लगाने लगती। ऐसे ही सध्या बीत गयी।

लुडमिला की मा ने बेटी की अवस्था देखकर चिंता से पूछा। उसने मामूली सिर दद बताकर मा को टाल दिया। ढीली तबियत से भोजन मे अनिच्छा बताकर मा के साथ खाने के लिए भी न बेठी। मा के आग्रह पर कम कॉफी का प्याला निगल लिया। रात मे नीद न आ सकने से

करवटें बदलती रही। लेटे रहना भी असह्य। आधी रात मे उठी। मेज पर लैम्प से नया शेड उतार लिया। आहट बचाकर रसोई मे गयी। बिजली का चूल्हा जलाया और दात भीचकर शेड उस पर रख दिया। रसोई मे त्वचा जलने की तीखी चर्राहट भरी दुस्सह दुर्गन्ध भर गयी। सास लेना कठिन। उसने असह्य धुए और दुर्गन्ध से बचने के लिए रसोई की हवा निकलने वाला पखा चला दिया। कुछ मिनट मे शेड चुटकी भर राख बन गया। लुडमिला ने वह राख समेट कर बतन धोने की जगह से बहा दी।

रसोई से लौट कर लुडमिला पलग पर गिर पडी। दो घटे तक मन स्थिर करने का यत्न करने पर भी असह्य बेचैनी। वह बैठक मे गयी। मेज पर लैम्प जलाकर पत्र लिखने लगी। पत्र लिफाफे मे डाल टिकट लगाया। पौ फटते-फटते आहट बचाकर घर से निकली और पत्र गली के मोड पर पत्र पेटी मे डाल दिया, पहली डाक से निकल सकने के लिए।

लिफाफे पर प्रेयसी के हस्ताक्षर देखकर मेजर हास का मन उमग आया। अनुमान किया—उपहार की पहुँच के लिए सप्रेम धन्यवाद। मुस्कान से लिफाफा खोलकर पत्र पढा—

'जघन्य हिंसक पशु,

मेरे बर्बर सिद्धान्तो और प्रकृति से नारी पर चरम अत्याचार और अपमान का चिह्न पहुँचा। लानत। सभी जातियो—नस्लो की नारियो कानारीत्व ही उनका मूल अस्तित्व है। नारीत्व का अपमान ससार भर की नारियो का अपमान है। नारीत्व के चरम उत्पीडन और अपमान के प्रतीक शेड को मैंने जला दिया। तेरे जैसे हिंस्र पशुओ के सिद्धान्त और व्यवहार मुझे त्वचा जलने की दुर्गन्ध की तरह असह्य है। तेरी

भावना के मृत शेट के माथ मेरे-तेरे सम्वन्ध भी जल गये । समाप्त ।'

—लुडमिला

पत्र पढकर मेजर हास के चेहरे की दृढता पर सुर्खी आ गयी । वह परम निष्ठावान नाजी था । उसके लिए वैयक्तिक कामनाए और सबध नाजी आदर्शों, हिटलर के आदेशो, जर्मन आर्य जाति के ससार व्यापी आधिपत्य की तुलना मे हेय थे । हास ने लुडमिला का पत्र आवश्यक विवरण के साथ नाज़ीवाद द्रोही, राष्ट्र-विश्वासघाती भीतरी शत्रुओ को निवटाने वाली पुलिस गेसटापो के केन्द्र मे भेजकर नाजी निष्ठा और आय जाति के प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर दिया ।

मेजर हास को पत्र लिखने के चौंवीस दिन वाद गेसटापो की हैमवग शाखा के मिपाही लुडमिला को अपने दफ्तर मे ले गये । हास को लिखा उसका पत्र उसे दिखाकर उसके व्यवहार की मफाई पूछी गयी ।

मेरे विचार इस पत्र मे स्पष्ट है । मै नारी हूँ । जाति-नस्ल के भेद के वावजूद नारीत्व का अपमान कभी नही सह सकती । लुडमिला ने उत्तर दिया ।

लुडमिला को हवालात मे बन्द करके उसका मामला आयजाति, नाजीवाद विरोधी और राष्ट्रघाती आस्तीन के साप, देश के भीतरी शत्रुओ के विषय मे निणय करने वाली अदालत मे भेज दिया गया ।

•